Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

वर्ष- 6
अंक- 44

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

28 रबीय्युल अव्वल 1443 हिज्री कमरी 14 इख़ा 1400 हिज्री शम्सी 4 नवम्बर 2021 ई.

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

मांगने की निंदा और इस से बचने का प्रोत्साहन

(1480) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैंकि नबी करीम अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम में से कोई व्यक्ति अपनी रस्सी ले फिर सुबह को पहाड़ की तरफ़ निकल जाए और लकड़ियाँ इकट्ठी करे और उन को बेचे और खाए और सदक़ा भी करे। इसके लिए इस से बेहतर है कि लोगों से मांगे।

अपनी सदक़ा की हुई चीज़ को ख़रीदने की मनाही

(1489) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते थे कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो अल्लाह तआला के रास्ता में एक घोड़ा बतौर सदक़ा दिया। फिर उन्हों ने उसे बिकते हुए देखा और ख़रीदना चाहा। वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इजाज़त चाही। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने सदक़ा को वापस न लो।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

इन्सानी कमज़ोरी का तो कुछ ठिकाना ही नहीं है। वह एक क़दम भी ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और समर्थन के बिना नहीं चल सकता।

फिर जब वह इतनी कमज़ोरियों का निशाना और सार है तो उसके लिए अमन और सुरक्षा का यही मार्ग है कि ख़ुदा तआला के साथ उसका मामला साफ़ हो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला पर भरोसा करने के अर्थ

जो लोग अपनी शक्ति पर भरोसा करते हैं और ख़ुदा तआला को छोड़ते हैं उनका अंजाम अच्छा नहीं होता। इसके यह अर्थ नहीं हैं कि हाथ पैर तोड़ कर बैठ रहने का नाम ख़ुदा पर भरोसा है। माध्यम से काम लेना और ख़ुदा तआला की प्रदान की शक्तियों को काम में लगाना यह भी ख़ुदा तआला का सम्मान है जो लोग इन शक्तियों से काम नहीं लेते और मुँह से कहते हैं कि हम ख़ुदा पर भरोसा करते हैं वे भी झूटे हैं। वे ख़ुदा तआला का सम्मान नहीं करते। ख़ुदा तआला को आज़माते हैं और उस की प्रदान की हुई शक्तियों और ताक़तों को व्यर्थ क़रार देते हैं और इस तरह पर इसके सम्मुख शोख़ी और अपमान करते हैं।اِيَّاكَ نَعۡبُدُ के अभिप्राय से दूर जा पड़ते हैं इस पर अनुकरण नहीं करते, औरاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُका प्रकटन चाहते हैं, यह उचित नहीं जहां तक संभव और ताक़त हो। माध्यमों की प्रयोग करे, परन्तु इन माध्यमों को अपना उपास्य और मुश्किल- दूर करने वाला क़रार न दे, बल्कि काम लेकर फिर अल्लाह तआला की तरफ लौटे और इस बात पर शुक्र के सिज्दे करे कि उसी ख़ुदा ने वे शक्तियां और ताक़तें उसको प्रदान फ़रमाई हैं।

अल्लाह तआला में फना पाने वाले का स्थान

ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और समर्थन के बिना इन्सान कुछ भी नहीं कर सकता। जब अल्लाह तआला की तरफ़ इन्सान खिंचा जाता है और ख़ुदा तआला में फ़ना हो जाता है तो इससे वे काम होते हैं,जो ख़ुदा के काम कहलाते हैं। इस पर उच्च से उच्च नूर प्रकट होने लगते हैं। इन्सानी कमज़ोरी का तो कुछ ठिकाना ही नहीं है। वह एक क़दम भी ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और समर्थन के बिना नहीं चल सकता। मैं तो यहां तक विश्वास रखता हूँ कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसे मदद न मिले तो वह शौच इत्यादि के बाद नाला तक भी बाँधने की ताक़त नहीं रख सकता। तबीबों ने एक बीमारी लिखी है कि इन्सान छींक के साथ ही हलाक हो जाता है। निसन्देह याद रखो कि इन्सान कमज़ोरियों का सार है और इसी लिए ख़ुदा तआला ने फ़रमाया हैخُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِيۡفًا (अन्निसा :29) इस का अपना तो कुछ भी नहीं है। सिर से पांव तक इतने अंग नहीं

शेष पृष्ठ 12 पर

यदि इन्सान का जीवन केवल इस दुनिया तक ख़त्म हो जाती है तो
मानों इस क़दर बड़ी दुनिया अल्लाह तआला ने केवल इस लिए पैदा की है कि
इन्सान इस में पैदा हो, कुछ दिन खाए पिए और फिर मर जाए और यह ख़्याल बिल्कुल बुद्धि के विपरीत है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल्-हिज्र आयत नम्बर : 86 وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ الۡجَمِيۡلَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

अर्थात आसमान और ज़मीन की पैदाइश पर ग़ौर तो करो क्या वह बिना किसी उद्देश्य के नज़र आती है। इस कारख़ाना पर नज़र डालने से प्रत्येक अक़लमंद समझ सकता है कि इस क़दर बड़ा निज़ाम किस उद्देश्य से है और इस से नतीजा निकाल सकता है कि ساعة (प्रलय) अवश्य आने वाली है । ساعة (प्रलय) का शब्द क़ियामत के लिए भी इस्तिमाल होता है और इस वादे वाली निश्चित घड़ी के लिए भी जो नबियों के दुश्मनों की तबाही और उनके मानने वालों की तरक़्क़ी के लिए निर्धारित होती है। आयत का पहला हिस्सा दोनों ساعة के लिए बतौर दलील है। ज़मीन और समान की पैदाइश क़ियामत की भी दलील है और नबियों की सफ़लता और उनके दुश्मनों की तबाही की भी।

क़ियामत की इस तरह कि यदि इन्सान का जीवन केवल इस दुनिया तक ख़त्म हो जाता है तो मानों इस क़दर बड़ी दुनिया अल्लाह तआला ने केवल इस लिए पैदा की है कि इन्सान इस में पैदा हो कुछ दिन खाए पिए और फिर मर जाए और यह ख़्याल बिल्कुल बुद्धि के विपरीत है। इस क़दर बड़े निज़ाम का पैदा करना एक बहुत बड़े उद्देश्य के लिए ही हो सकता है और वह उद्देश्य पूरा होता इस दुनिया में ज़र नहीं आता। अत: आवश्यक है कि इन्सान का जीवन इसी संसारिक जीवन तक ख़त्म न हो बल्कि इस निज़ाम की अज़मत के अनुसार एक बड़े ज़माना तक चली जाए जिस में

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग-11)

जनाज़ा के साथ महिलाओं के क़ब्रिस्तान जाने, तदफ़ीन के वक़्त उनके मर्दों के पीछे खड़े होने या गाड़ियों में बैठे रहने के बारे में रहनुमाई, हदीस संकलन का तरीक़ा

एक महिला ने जनाज़ा के साथ महिलाओं के क़ब्रिस्तान जाने, तदफ़ीन के वक़्त उनके मर्दों के पीछे खड़े होने या गाड़ियों में बैठे रहने के बारे में हुज़ूर अनवर से मसला दरयाफ़त किया। इस का उत्तर देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 09 जून 2018 ई. में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : मुस्तनद हदीसों से पता चलता है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने साधारणत: महिलाओं को जनाज़ा के साथ क़ब्रिस्तान जाने से मना फ़रमाया है लेकिन इस बारे में महिलाओं पर बहुत ज़्यादा सख़्ती भी नहीं की गई और यदि किसी ख़ास वजह से कोई महिला जनाज़ा के साथ देखी गई तो इस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दरगुज़र फ़रमाया।

ज़माना-ए-जाहिलीयत में मय्यत पर नोहा (मातम मनाने का तरीक, रोना पीटना) का बहुत ज़्यादा रिवाज था और ज़्यादा-तर नोहा महिलाएं ही किया करती थीं। इस्लाम ने नोहा को हराम क़रार दिया तो इसके साथ ही महिलों को भी साधारणत: मय्यत के साथ क़ब्रिस्तान जाने से मना कर दिया गया ताकि उनमें से कोई अपनी भावनाओं पर क़ाबू न रखते हुए तदफ़ीन के वक़्त रोना पीटने की सूरत पैदा न कर दे। उल्मा-ए-सलफ़ और फ़ुक़हा ने भी महिलाओं के जनाज़े के साथ जाने को नापसंदीदा क़रार दिया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र समय में और आपके बाद ख़ुलफ़ाए अहमदियत के ज़माना में साधारणत: यही तरीक़ रहा है कि जनाज़ा पढ़ते वक़्त महिलों को अलग इंतिज़ाम के साथ नमाज़ जनाज़ा में तो शामिल होने दिया जाता है लेकिन तदफ़ीन के वक़्त महिलों को जनाज़ा के साथ जाने की आज्ञा नहीं दी जाती।

अत: किसी ख़ास वजह के अतिरिक्त महिलों को जनाज़ा के साथ क़ब्रिस्तान नहीं जाना चाहिए, लेकिन यदि किसी मजबूरी के तहत महिलाओं को जनाज़ा के साथ क़ब्रिस्तान जाना पड़ जाए तो जैसा कि आपने अपने पत्र में लिखा है उन्हें तदफ़ीन के वक़्त अपनी गाड़ियों में ही बैठे रहना चाहिए और क़ब्र तैयार होने पर मर्दों के वहां से हट जाने के बाद यदि वे चाहें तो क़ब्र पर दुआ कर सकती हैं।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर की सेवा में हदीस सकलन की गंभीरता के बारे में कुछ रोशनी डालने का निवेदन किया। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 29 जून 2018 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : इस बारे में दो किस्म की रिवायात पुस्तकों हदीसों में मौजूद हैं। एक में كِتَابَ اللهِ وَعِتْرَتِي أَهْلَ تَابَ اللهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّهِ के शब्द आए हैं और दूसरी में بَيْتِيك के शब्द आए हैं।

كِتَابَ اللهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّه ِ वाली रिवायात सिक़ा और मुस्तनद हैं। क़ुरआन-ए-करीम वास्तव में ख़ुदा तआला का कलाम और हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत इस कलाम की अमली तफ़सीर है, जो दोनों लाज़िम-ओ-मल्ज़ूम और हर किस्म के ज़न से पवित्र हैं और यही वे दो चीज़ें हैं जिनको मज़बूती से थामने (अर्थात उनके आदेशों पर अमल करने वाले) कभी गुमराह नहीं हो सकते। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी मौता में इसे दर्ज किया है।

जबकि وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي वाली रिवायात को जबकि सहा सित्ता में से कुछ पुस्तकों ने रिवायत किया है लेकिन इमाम बुख़ारी ने उसे अपनी सही में दर्ज नहीं किया। उलमाए हदीस ने इन रिवायात पर रिवायतन और दिरायातन बहुत कलाम किया है। तथा अस्मा उर्रिजाल की पुस्तकों में इन रिवायात के रावियों पर बहुत ज़्यादा जरह की गई है और साबित किया गया है कि उनकी अस्नाद में ज़रूर कोई न कोई ऐसा रावी है जिसकी हमदर्दियाँ अहल-ए-तशीअ के साथ थीं।

इन रिवायात के एक रावी हज़रत ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु अन्हो का अपना वर्णन काबिल-ए-ग़ौर है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और बहुत कुछ जो मैंने हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना था भूल चुका हूँ।

इन रिवायात के एक रावी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। उनसे मर्वी एक संक्षिप्त रिवायत जो सही मुस्लिम और सुंन तिरमिज़ी ने दर्ज की है इस में كِتَابَ اللهِ وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي के शब्द वर्णन हुए हैं लेकिन हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से यही रिवायत जब तफ़सील के साथ सही मुस्लिम, सुंन इब्ने माजा ने दर्ज की तो उनमें कहीं وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي के शब्द दर्ज नहीं किए बल्कि केवल كِتَابَ اللهِ के शब्द रिवायत किए हैं।

अत: मौता इमाम मालिक, सही मुस्लिम, सुंन अबी दाऊद और सुंन इब्ने माजा इत्यादि की केवल वे रिवायात काबिल-ए-एतिमाद और रिवायतन और दिरायातन काबिल-ए-स्वीकार हैं जिनमें अल्लाह की पुस्तक को मज़बूती से थामे रखने का वर्णन है या अल्लाह की पुस्तक और हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलने का वर्णन किया गया है। और बाक़ी सब ऐसी रिवायात जिनमें अल्लाह की पुस्तक के साथ أَهْلَ بَيْتِي يا وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي के शब्द आए हैं, वह जैसा कि उलमाए हदीस और माहिरीन अस्मा उर्रिजाल ने वर्णन किया है, काबिल-ए-स्वीकार नहीं हैं।

प्रश्न : एक दोस्त ने हदीस الصَّلَاةُ الْمَكْتُوْبَةُ وَاجِبَةٌ خَلْفَ كُلِّ مُسْلِمٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَإِنْ عَمِلَ الْكَبَائِرَ (सुंन अबी दाऊद किताबुस स्सलात) की रोशनी में दरयाफ़त किया है कि लोगों जमाअत के लिए किसी ग़ैर अहमदी के पीछे नमाज़ पढ़ना क्यों दरुस्त नहीं? इस प्रश्न का उत्तर अता फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 05 अक्तूबर 2018 ई. में फ़रमाया :

उत्तर : यह एक मुकम्मल हदीस सुंन अबी दाऊद पुस्तक अल्जिहाद में इस तरह दर्ज है :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجِهَادُ وَاجِبٌ عَلَيْكُمْ مَعَ كُلِّ أَمِيْرٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَالصَّلَاةُ وَاجِبَةٌ عَلَيْكُمْ خَلْفَ كُلِّ مُسْلِمٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَإِنْ عَمِلَ الْكَبَائِرَ وَالصَّلَاةُ وَاجِبَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَإِنْ عَمِلَ الْكَبَائِرَ۔

इसलिए इस में केवल नमाज़ पढ़ने के बारे में इरशाद नहीं फ़रमाया बल्कि इस के साथ यह भी फ़रमाया है कि हर अमीर के नेतृत्व में जिहाद करो और हर मुस्लमान की नमाज़ जनाज़ा अदा करो लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपनी सुन्नत इस से विभिन्न है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने न मक़रूज़ की, न ख़ियानत करने वाले की और न ही ख़ुदकुशी करने वाले की नमाज़ जनाज़ा स्वयं पढ़ी।

इसी लिए उलमाए हदीस ने इस हदीस की सेहत पर कलाम किया है और इस रिवायत की सनद पर कई आपत्तियां उठाई हैं।

अतिरिक्त इसके हदीस की पुस्तकों में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह इरशाद भी मौजूद है कि ''لَا يَؤُمَّنَّكُمْ ذُوْ جُرْأَةٍ فِي دِيْنِهِ'' अर्थात कोई ऐसा व्यक्ति जो अपने दीन में बे-बाक हो गया हो या दीन के आदेशों का ख़्याल नहीं रखता हो वह तुम्हारी इमामत कदापि न करवाए।

इमामत के हवाला से सबसे बढ़कर वह हदीस है जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आने वाले मसीह मौऊद के बारे में फ़रमाया है कि وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ अर्थात उस वक़्त तुम्हारा इमाम तुम में से ही होगा। और यह हदीस की पुस्तकों हदीसों की सबसे मुस्तनद पुस्तकों बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में फ़रमाया है कि फ़ासिक़, फ़ाजिर के पीछे नमाज़ पढ़ो, यह नहीं फ़रमाया कि मुकफ़्फ़िर और मुकज़्ज़िब के पीछे नमाज़ पढ़ो। अत: यदि इस हदीस को सही मान भी लिया जाए तो इस का अर्थ केवल यह होगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वास्तव में हमें एक

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे इस्लमा वालों निसंदेह अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया है और उसने दुश्मनों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद की है और तुम्हें इन देशों का वारिस बना दिया है

और तुम्हें ज़मीन में गौरव प्रदान किया है, अतः तुम्हें अपने रब की नेअमतों पर शुक्र बजा लाना चाहिए, तुम लोग न-फ़रमानी वाले कामों से दूर रहो क्योंकि न-फ़रमानी वाले काम नेअमतों की नाशुक्री है और बहुत कम ऐसा हुआ है कि अल्लाह किसी क़ौम पर इनाम करे और वे नाशुक्री करें फिर वे जल्द तौबा न करें परन्तु ज़रूर उनकी इज़्ज़त खत्म कर दी जाती है

और उन पर उनके दुश्मनों को मुसल्लत कर दिया जाता है, ख़ुदा ने हम को जो इज़्ज़त दी है वह इस्लाम की इज़्ज़त है और हमारे लिए यही काफ़ी है (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की यात्रा ईलिया, बैतुल-मुक़द्दस की विजय और हरक़्ल की जानिब से हम्स के घेराव और उस के निवारण का विस्तारपूर्वक वर्णन

तीन मरहूमीन आदरणीय चौधरी सईद अहमद लखन साहिब (रिटायर्ड स्टेशन मास्टर हाल मुक़ीम कैनेडा), आदरणीय शाहाबुद्दीन साहिब (नायब नैशनल अमीर बंगलादेश) और अर्जनटाइन के आरंभिक स्थानीय अहमदी आदरणीय राऊल अब्दुल्लाह साहिब का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ इजनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 सितम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने का वर्णन हो रहा था। आज उसी अनुक्रम में बैतुल-मुक़द्दस की फ़तह जो पंद्रह हिज्री में हुई इसका वर्णन होगा। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ियादत में इस्लामी लश्कर ने बैतुल-मुक़द्दस का घेराव कर लिया तो हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर भी उनसे जा मिला। ईसाइयों ने क़िला बन्दी से तंग आकर सुलह की पेशकश की लेकिन शर्त यह रखी कि ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आ कर सुलह का अनुबंध करें। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस की सूचना दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सहाबा से मश्वरा किया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने जाने का मश्वरा दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी राय को पसंद किया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना का अमीर निर्धारित फ़रमाया। एक दूसरी रिवायत में है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर निर्धारित फ़रमाया था। इसके बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल-मुक़द्दस के लिए रवाना हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह सफ़र कोई मामूली सफ़र नहीं था। इस का उद्देश्य दुश्मनों के दिलों पर इस्लामी रोब और दबदबा बिठाना था लेकिन जब आप रवाना हुए तो रवायात में है कि दुनियावी बादशाहों की तरह न तो उनके साथ कोई नगाड़ा था न कोई लाओ लश्कर था यहां तक कि एक मामूली सा ख़ेमा भी साथ नहीं था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो एक घोड़े पर सवार थे और कुछ साथी मुहाजिरीन और अंसार में से थे। एक रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ केवल उनका एक ग़ुलाम, खाने के लिए कुछ सत्तू और एक लक्कड़ी का पियाला था और ऊंट पर सवार थे लेकिन इस के बावजूद जहां भी यह ख़बर पहुँचती कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना से बैतुल-मुक़द्दस का इरादा किया है तो ज़मीन काँप उठती थी।

(उद्धरित तारीख़ इब्ने खुलदून अनुवादक भाग 3 हिस्सा प्रथम पृष्ठ 207 प्रकाशन दारुल इशात कराची 2009 ई.)

इस बात की वज़ाहत में यह एक सफ़र का मुख़्तसर-सा हाल वर्णन किया गया है लेकिन इस में तफ़सील नहीं है। बहरहाल ईलिया एक शहर था जिसमें बैतुल-मुक़द्दस मौजूद है, इस का घेराव किस ने किया था और किस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में बैतुल-मुक़द्दस तशरीफ़ लाने का निवेदन किया था? इस बारे में तिब्री में लिखा है कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़त भेजा जिसमें उनसे सहायता भिजवाने का निवेदन किया। इस में हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने ये तजवीज़ किया था कि मुझे इंतिहाई घमसान की जंगें दरपेश हैं और कई शहर हैं जिनसे जंगें अभी बाक़ी हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद का मुंतज़िर हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो का यह ख़त पहुंचा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु समझ गए कि हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात पूरी मालूमात के बाद ही लिखी होगी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों में अपने सफ़र की मुनादी करा दी और सफ़र के लिए कूच किया। (उद्धरित तारीख़ तिब्री भाग 2 हिस्सा दोम, पृष्ठ 804 प्रकाशन दारुल इशात कराची 2004 ई.)

तिब्री में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शाम में तशरीफ़ आवरी के सम्बन्ध में साथ ही ये भी लिखा है कि इस का कारण वास्तव यह पेश आया था कि हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो बैतुल-मुक़द्दस पहुंचे तो वहां के लोगों ने उनसे शाम के अन्य शहरों के सुलह के मु'आहदात के अनुसार सुलह करनी चाही और उनकी ख़ाहिश यह भी थी कि इस सुलह के अनुबंध में मुस्लमानों की तरफ़ से सरबराह की हैसियत से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी शिरकत करें। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हों हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में यह लिखा तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना से रवाना हो गए। (तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 449 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (मौअज्मुल बुल्दान भाग अव्वल पृष्ठ 348 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

लेकिन हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत पर कुछ इतिहासकारों को तसल्ली नहीं है। मुहम्मद हुसैन हैकल इस हवाले से तहरीर करते हैं कि यह भी ज़रूरी है कि हम इस रिवायत को हक़ीक़त से बईद समझें जिसका वर्णन यह है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो ने तन्हा या मुशतर्का तौर पर बैतुल-मुक़द्दस का घेराव किया जैसा कि तिब्री, इब्न-ए-असीर और इब्ने अक्सीर इत्यादि नक़ल करते हैं। तिब्री की रिवायत है कि कहा जाता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के शाम आने की वजह यह थी कि हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने बैतुल-मुक़द्दस का घेराव किया तो शहर वालों ने, शाम के दूसरे इलाक़ों के लोगों से जो सुलह हो चुकी थी इन्ही शर्तों पर उन्हें सुलह का निवेदन किया परन्तु इस में इतनी शर्त और बढ़ाई कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद तशरीफ़ ला कर सुलह की तकमील करें। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की सूचना ख़िलाफ़त के दरबार में इरसाल की और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना से रवाना हो गए। यह लिखते हैं कि इस रिवायत को हम खिलाफ-ए-हक़ीक़त समझते हैं कि बैतुल-मुक़द्दस के घेराव के समय हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो हिम्ज़, हलब, अन्ताकिया और इसके आस-पास के शहरों में फ़ुतूहात में व्यस्त थे और हरक़्ल उनके बिलमुक़ाबिल रुहा स्थान में बैठा लश्कर जमा कर रहा था कि

उन्हें उल्टे पांव वापस होने पर मजबूर कर दे। ये समस्त घटनाएँ भी बैतुल-मुक़द्दस के घेराव की सन् 15 हिज्री अनुसार सन् 636 इं. की हैं और यह लिखते हैं कि उनके नज़दीक यह सही है कि बैतुल-मुक़द्दस का घेराव इसी सन् में कई महीने तक जारी रहा जिस सन् में ये दोनों सिपहसालार शाम के इंतिहा में बढ़ते चले जा रहे थे यहां तक कि उन्होंने हरक़्ल को अपने दारुल सल्तनत में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया था। ऐसी सूरत में कि वे दोनों इधर व्यस्त थे, यह कहना कि उनमें से किसी एक या दोनों ने बैतुल-मुक़द्दस का घेराव किया एक ऐसी बात है जो किसी तरह नहीं बनती। इसलिए नाक़ाबिल-ए-क़बूल क़रार देना पड़ता है। अब केवल यह एक रिवायत और बाक़ी रह जाती है और तिब्री ने भी पहले उस के बारे में लिखा है कि बैतुल-मुक़द्दस का घेराव हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने किया था जो तवील मुद्दत तक जारी रहा और बैतुल-मुक़द्दस वालों ने बड़े जोश और बड़ी शिद्दत से मुस्लमानों का मुक़ाबला किया और यही रिवायत हमारी राय में सही है। इसलिए कि यह इस समानता से इत्तिफ़ाक़ रखती है अर्थात जो मुक़ाबला हो रहा था इस से ज़ाहिर होता है जो कि बैतुल-मुक़द्दस ने विभिन्न ज़मानों में हर हमला-आवर के मुक़ाबले में ज़ाहिर की।

(उद्धरित हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ365-366 प्रकाशन इस्लामी पुस्तकों ख़ाना लाहौर

मुहम्मद हुसैन हैकल मज़ीद लिखता है कि "ताज्जुब है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो महिज़ सुलह की तकमील और अहदनामे की तस्वीत" अर्थात लागू करने "के लिए लश्कर के साथ तशरीफ़ ले जाते हैं और इसी तरह ताज्जुब है कि बैतुल-मुक़द्दस वाले अनुबंध की तकमील के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के मदीना से तशरीफ़ लाने की मांग करते हैं हालाँकि जानते हैं कि यदि मदीना से कोई क़ाफ़िला लगातार सफ़र करके उनकी तरफ़ आए तो पूरे तीन हफ़्ते लगेंगे। इस लिए "यह कहता है कि'' मेरे नज़दीक सही यह है कि घेराव की तवालत और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के इन पत्रों से जिनमें दुश्मन की ताक़त का वर्णन करके मदद तलब की गई थी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पैमाना सब्र से भर गया था। इसलिए जब उनसे नई सहायता तलब की गई तो उस के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी रवाना हो गए और जाबिया में क़ियाम फ़रमाया जो शाम के रेगिस्तान और सरज़मीन-ए-अरदन के मध्य वाक़्य है। इस दौरान हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो हिम्ज़ शाम की फ़तह से फ़ारिग़ हो चुके थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन दोनों को हुक्म भेजा कि जाबिया में आकर मिलें ताकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उनसे और फ़ौज के दूसरे सरदारों से मश्वरे के बाद बैतुल-मुक़द्दस की मुहिम पार करने की कोई मुफ़ीद राह तलाश कर सकें। अत्राबून और सफ़रे नियूस को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तशरीफ़ आवरी का इलम हुआ।"

यहां नामों का मतभेद है। अरबी पुस्तकों में यह नाम अर्तबून लिखा है लेकिन हैकल के नज़दीक वह दरुस्त नहीं है इस की तहक़ीक़ के अनुसार नाम अत्रबून है और सफरो नियूस का नाम अरबी पुस्तकों में सफरो नियूस लिखा है।

बहरहाल यह कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कोई रस्ता तलाश करने के लिए कि क्या स्ट्रैटजी (strategy) बनाई है इसके लिए इकट्ठा किया था। "हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो हिम्ज़ के हाथों शाम पर जो बीती थी उसकी भी सूचना मिली तो उन्होंने समझ लिया'' अर्थात इन दो सरदारों ने जो दुश्मनों के थे'' कि बैतुल-मुक़द्दस की मुक़ावमत अब ज़्यादा देर क़ायम नहीं रह सकती।" अर्थात मज़ीद मुक़ाबला मुश्किल है'' इसलिए अत्रबून तो कुछ फ़ौज लेकर चुपके से मिस्र खिसक गया और बूढ़े पादरी ने अपनी निजात की तरफ़ से संतुष्ट हो कर मुस्लमानों से सुलह की गुफ़्तगु शुरू कर दी और चूँकि उसे यह मालूम था कि अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो जाबिया में इक़ामत फ़र्मा हैं" जाबिया तक आ चुके हैं "इस लिए यह शर्त लगा दी कि सुलह का अनुबंध लिखने के लिए वह स्वयं तशरीफ़ लाएंगे। जाबिया और बैतुल-मुक़द्दस में इतना फ़ासिला नहीं था कि सफ़रे नीयूस की इस दरख़ास्त के उत्तर में उज्र पेश कर दिया जाता।" तो यह कहते हैं कि "यह है वह बात जिसे मैं सही समझता हूँ और जो शाम और फिलिस्तीन पर हमले के सम्बन्ध में घटनाओं के सिलसिले में तारीख़ी सियाक़-ओ-सबाक़ के अनुसार है।"

(हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 358-368 प्रकाशन इस्लामी क़ुतुब ख़ाना लाहौर) (तारीख़ खुलफ़ा-ए-राशेदीन الفتوحات والإنجازات السياسية पृष्ठ 279 अज़ मकतब अल्-शामला)

बहरहाल इन पत्रों के मिलने के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की क्या मशवरा हुआ? इस बारे में लिखा है कि पत्रों के मिलने के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त सम्मानित सहाबा को जमा किया और मशवरा किया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हों ने राय दी कि ईसाई भयभीत और दिल छोड़ चुके हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की दरख़ास्त को रद्द कर दें तो उनको और भी ज़िल्लत होगी और यह समझ कर कि मुस्लमान उनको बिल्कुल तुच्छ समझते हैं बग़ैर शर्त के हथियार डाल देंगे लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस के ख़िलाफ़ राय दी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को ईलिया जाने का मश्वरा दिया और कहा कि मुस्लमानों ने सर्दी, जंग और लंबे क़ियाम की ग़ैरमामूली कठिनाई बर्दाश्त की है। यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले जाऐंगे तो इस में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के और मुस्लमानों के लिए अमन और आफ़ियत और बेहतरी है लेकिन यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें अपनी और सुलह की तरफ़ से मायूस कर दिया तो यह बात आप रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में अच्छी साबित नहीं होगी। दुश्मन तो क़िला बंद हो कर बैठा रहेंगे और उन्हें अपने मुल्क और रूमी बादशाह की तरफ़ से सहायता पहुंच जाएगी खासतौर पर इसलिए कि बैतुल-मुक़द्दस उनके नज़दीक बड़ी अज़मत रखता है और उनकी ज़यारत गाह है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को पसंद और क़बूल फ़रमाया। (उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी पृष्ठ 124 इदारा इस्लामियात 2004 ई.)(उद्धरित हज़रत अमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 369 प्रकाशन इस्लामी कुतुबखाना लाहौर)

इस यात्रा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ अन्य मुहाजिरीन और अंसार के अतिरिक्त हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्लिब रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। इस सफ़र के सम्बन्ध में एक रिवायत मिलती है कि अबू सईद मुकरबी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने इस सफ़र में सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद अपने साथियों के लिए तशरीफ़ फ़र्मा होते और उनकी तरफ़ अपना रुख करते। फिर कहते हर किस्म की प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है जिसने हमें इस्लाम और ईमान के माध्यम इज़्ज़त बख़शी और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से हमें शरफ़ बख़्शा और हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से गुमराही से हिदायत फ़रमाई और गिरोहों में तक़सीम के विपरीत हमें इकट्ठा किया और हमारे दिलों में प्रेम पैदा किया और दुश्मनों के समक्ष आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से हमारी नुसरत फ़रमाई और हमें विभिन्न शहरों में मुतमक्किन किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से हमें आपस में मुहब्बत करने वाला भाई भाई बना दिया। अत: तुम लोग इन नेअमतों पर अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन करो और इस से मज़ीद मदद तलब करो और उन नेअमतों पर अल्लाह से शुक्र की तौफ़ीक़ माँगो और वे नेअमतें जिनमें तुम चलते फिरते हो उनके सम्बन्ध में अल्लाह तआला से दुआ माँगो कि वे तुम पर उन्हें पूरा कर दे क्योंकि अल्लाह तआला अपनी जानिब रग़बत चाहता है और वह शुक्र गुज़ारों पर अपनी नेअमतों को मुकम्मल करता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस सफ़र के दौरान प्रारम्भ से लेकर वापस तशरीफ़ लाने तक इस कथन को हर सुबह कहते रहे और उसे तर्क छोड़ा नहीं। (अल इक्तेफ़ा बिमा तज़मिनामिन मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्लास्ता खुल्फ़ा भाग 2 पृष्ठ 292-293 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.) अर्थात यही एक ही संदेश प्रतिदिन देते थे।

मुस्लमान सरदारों को सूचना दी जा चुकी थी कि जाबिया में आकर उनसे मिलें। सूचना के अनुसार यज़ीद बिन अबी सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हो और ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो इत्यादि ने यहीं स्वागत किया। शाम में रह कर उन अफ़सरों में अरब की सादगी बाक़ी नहीं रही थी। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने ये लोग आए तो इस रूप से आए कि शरीर पर हरीर और दिबाज की चिकनी और पुर-तकल्लुफ़ क़बाएँ थीं और ज़रक़-बरक़ वस्त्र और ज़ाहिरी शान-ओ-शौकत से अजमी मालूम होते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सख़्त ग़ुस्सा आया। घोड़े से उतर पड़े और पत्थरों के टुकड़े उठा कर उनकी तरफ़ फेंके कि इस क़दर जल्द तुमने अजमी आदतें इख़तियार कर लीं। इन लोगों ने अर्ज़ किया कि क़बाओं के नीचे हथियार हैं अर्थात सिपहगरी का जोहर उन्होंने हाथ से नहीं दिया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि यदि यह बात है तो ठीक है।

(उद्धरित फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी पृष्ठ 124 इदारा इस्लामियात 2004 ई.)

कि ज़ाहिरी रख-रखाव तुमने उन लोगों को दिखाने के लिए किया है और अंदर

से तुम्हारा हुल्या अरबों वाला ही है (तो ठीक है)। एक रिवायत में वर्णित है कि यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान ने अर्ज़ किया। हे अमीरुल मोमेनीन हमारे पास कपड़े और सवारियां बहुत हैं और हमारे हाँ ज़िंदगी बहुत उम्दा है और माल बहुत सस्ता है और मुस्लमानों का वह हाल है जिसे आप रज़ियल्लाहु अन्हु पसनद फ़रमाते हैं। यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़ैद कपड़े पहनें और उन अच्छी सवारियों पर सवार हों और इस बहुत अत्याधिकत अनाज और गल्ला में से मुस्लमानों को खाने के लिए दें तो ऐसा करना प्रसिद्धि का कारण होगा और उमूर-ए-सलतनत की अदायगी में आपके लिए अत्याधिकत ज़ीनत का कारण होगा और अजमियों के नज़दीक आपकी अत्याधिकत अज़मत का कारण होगा। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया हे यज़ीद! नहीं। अल्लाह की क़सम! मैं इस हैयत और हालत को तर्क नहीं करूँगा जिस पर मैंने अपने दोनों साथियों को छोड़ा था अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु। जिस तरह मैं उनके साथ रहा था उसी हाल में रहूँगा और मैं लोगों के लिए ज़ीनत और सुन्दरता नहीं इख़तियार करूँगा क्योंकि मैं डरता हूँ कि कहीं ऐसा करना मुझे मेरे रब के हाँ बुरा न कर दे और मैं नहीं चाहता कि लोगों के पास तो मेरा मामला अज़मत इख़तियार कर जाए और अल्लाह के हुज़ूर बहुत छोटा हो जाए। अत: हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसी हालत पर क़ायम रहे जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़िंदगी में थे यहां तक कि वह दुनिया से कूच कर गए। (अल इक्तेफ़ा बिमा तज़मन मिन मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वस्सलासा खुल्फ़ा भाग 2 भाग प्रथम पृष्ठ 295 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

मुस्लमानों और ईसाइयों के मध्य सुलह नामा किस तरह हुआ? ईलिया वालों के नज़दीक अनुबंध कहाँ हुआ था? इस के सम्बन्ध में अक्सर इतिहासकारों ने लिखा है कि जाबिया के स्थान पर ईसाइयों और मुस्लमानों के मध्य सुलह का अनुबंध तै पाया था। लिखा है कि जाबिया में क़ियाम के दौरान हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौज के हलक़े में बैठे थे कि अचानक कुछ सवार नज़र आए जो घोड़े दौड़ाते हुए आ रहे थे और उनकी तलवारें चमक रही थीं। मुस्लमानों ने तुरंत हथियार सँभाल लिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने सवारों की तरफ़ इशारा किया तो फ़रमाया : घबराओ नहीं ये लोग अमान तलब करने आए हैं। ये लोग ईलिया के बाशिंदे थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें सुलह नामा लिख कर दिया।

(उद्धरित तारीख़ तिब्री भाग 2 हिस्सा दोम पृष्ठ 369-370 नफ़ीस एकेडेमी कराची 2004 ई.)(उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी पृष्ठ 125 इदारा इस्लामियात 2004 ई.)

फिर एक रिवायत है। अल्लामा बलाज़री और मुहम्मद हुसैन हैकल ने यह लिखा है कि सुलह का अनुबंध जाबिया के बजाय ईलिया में हुआ था जबकि मुहम्मद हुसैन हैकल ने अपनी किताब में दूसरी जगह यह भी लिखा है कि अनुबंध जाबिया में हुआ था।

(उद्धरित हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 368 - 371प्रकाशन इस्लामी पुस्तक ख़ाना लाहौर) (फ़ुतूहुल बुल्दान पृष्ठ 88 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

मुस्लमानों और ईलिया वालों के मध्य जो सुलह नामा हुआ उस की तहरीर तारीख़ तिब्री में इस प्रकार दर्ज है।

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। यह वह अमान है जो अल्लाह के बंदे अमीरुल मोमेनीन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ईलिया वालों को दी है। उनकी जान, माल, गरजे, सलीब, बीमार, तंदरुस्त और उनकी सारी क़ौम को अमान दी जाती है। कोई भी उनके गिरजा-घरों में क़ियाम नहीं करेगा और न वे गिराए जाऐंगे। न उनके गिरजा-घरों के अहातों में कुछ कमी की जाएगी और न उनकी सलीब को नुक़्सान पहुंचाया जाएगा और न उनके अम्वाल को नुक़्सान पहुंचाया जाएगा। और उनसे दीन के मुआमले में कोई जबर नहीं किया जाएगा और उनमें से किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचाई जाएगी और ईलिया में उनके साथ कोई भी यहूदी नहीं रह सकेगा और ईलिया वालों पर यह फ़र्ज़ है कि वे दूसरे शहरों के लोगों की तरह जिज़्या (इस्लामी हुकूमत में रहने वाले अन्य धर्मावलम्बियों पर लगने वाला कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) दें। उनको चाहिए कि वे रोमियों और फ़सादियों को ईलिया में से निकाल दें। अत: जो उन में से निकलेगा तो उस की धन संपत्ति को अमन है यहां तक कि वह अपने महफ़ूज़ स्थान तक पहुंच जाए। और जो व्यक्ति उनमें से ईलिया में रहना चाहे तो वह अमन में है और इस को ईलिया वालों की तरह जिज़्या (इस्लामी हुकूमत में रहने वाले अन्य धर्मावलम्बियों पर लगने वाला कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) देना होगा और ईलिया वालों में से जो व्यक्ति अपनी जान और माल लेकर रोमियों की तरफ़ जाना चाहे और वह अपनी इबादत-गाहों और सलीबों को छोड़कर चले जाएं तो उनकी जानें और उनकी इबादत के स्थान, उनकी सलीबें अमान में हैं। (छोड़ भी जाओगे तो कुछ नहीं किया जाएगा) यहां तक कि वे अपने महफ़ूज़ स्थान तक पहुंच जाएं और ईलिया में जंग से पहले जो काश्तकार थे यदि उनमें से कोई चाहे कि वह अपनी ज़मीनों पर बैठे रहें तो उन पर भी इलिया वालों की तरह जिज़्या देना होगा और जो रोमियों के साथ जाना चाहता है वह चला जाए और जो अपने घर वालों की तरफ़ लौटना चाहता है तो वह लौट आए, उनसे कुछ जिज़्या नहीं लिया जाएगा यहां तक कि उनकी फसलों की कटाई हो जाए। (अर्थात कि आमद पैदा हो जाएगी तब उनसे जिज़्या (इस्लामी हुकूमत में रहने वाले अन्य धर्मावलम्बियों पर लगने वाला कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) होगा) और जो कुछ इस मुआहिदे में है इस पर अल्लाह का अह्द है और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िम्मा है और खलिफ़ा का ज़िम्मा है और मोमेनीन का ज़िम्मा है जब तक कि वह जिज़्या अदा करते रहें जो उनके ज़िम्मा है।

इस मुआहिदे पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही दर्ज थी। (तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 449 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

तारीख़ इब्न-ए-खुलदून में लिखा है कि इस मुआहिदे से कुछ बातें साबित होती हैं ; नंबर एक यह कि मुस्लमानों ने अपना मज़हब तलवार के ज़ोर से नहीं फैलाया ; दो यह कि उनके अहद-ए-हुकूमत में दूसरे मज़ाहिब वालों को बहुत बड़ी मज़हबी आज़ादी हासिल थी ; तीन यह कि ग़ैर क़ौमों से ज़बरदस्ती जिज़्या नहीं लिया जाता था। उनको क़ियाम करने और जिज़्या देने में इख़तियार हासिल था और दोनों सूरतों में उनको अमन दिया गया था।

(उद्धरित तारीख़ इब्ने खुल्दून भाग 3 हिस्सा अव्वल पृष्ठ 208 दारुल इशात कराची 2009 ई.)

इस सुलह की ख़बर जब रमला वालों को मिली तो वे भी अमीरुल मोमेनीन से इसी किस्म का अनुबंध करने के लिए बेचैन हो गए। यही हाल फिलिस्तीन के दूसरे लोगों का था। लुद् वालों को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से एक पत्र लिखा गया जिसके अधीन वे शहर भी शामिल कर लिए गए जिन्होंने इसके बाद मुस्लमानों की इताअत क़बूल कर ली। इस ख़त में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लुद् के लोगों की धन संपत्ति, गिरजा, सलीब, तंदरुस्त, बीमार और समस्त धर्मों को अमान दी और कहा कि यदि वे शाम के शहरों की तरह जिज़्या (इस्लामी हुकूमत में रहने वाले अन्य धर्मावलम्बियों पर लगने वाला कर जो उनकी जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए लिया जाए) अदा करेंगे तो उनके मज़हब पर जबर नहीं किया जाएगा और न वीवादित अक़ायद के आधार पर किसी को नुक़्सान पहुंचाया जाएगा। इन समस्त कामों से फ़ारिग़ हो कर अमीरुल मोमेनीन ने फिलिस्तीन पर दो हाकिम निर्धारित फ़रमाए और मुल्क का आधा आधा हिस्सा इन दोनों में बांट दिया। इसलिए अल्-कमा बिन हकीम का मर्कज़ हुकूमत रमला क़रार पाया और अल्-कमा बिन मुजज़्ज़ि का ईलिया। (उद्धरित हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 373 प्रकाशन इस्लामी पुस्तकख़ाना लाहौर)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बैतुल-मुक़द्दस में तशरीफ़ लाए।

इसके बारे में लिखा है कि जिस समय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ईलिया वालों को पनाह और अमान दी और ईलिया में लश्कर को ठहरा दिया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु जाबिया से बैतुल-मुक़द्दस की जानिब चल पड़े। लिखा है कि जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु आपने घोड़े पर सवार हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने महसूस किया कि आपके घोड़े के पांव में दर्द की वजह से सीधा नहीं चल रहा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए एक तुर्की नसल का घोड़ा लाया गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस पर सवार हुए तो वह एड़ी करने लगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस से उतर आए। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने चंद रोज़ बाद अपना घोड़ा तलब किया जिस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सवारी तर्क की हुई थी। उसका ईलाज हो रहा था। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस पर सवार हुए यहां तक कि बैतुल-मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए।

(उद्धरित तारीख़ तिब्री अनुवादक सय्यद मुहम्मद इब्राहीम नदवी भाग 2 हिस्सा दोम पृष्ठ 809 दारुल इशात 2003 ई.)

बैतुल-मुक़द्दस क़रीब आया तो हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो और फ़ौज के सरदार स्वागत के लिए आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का लिबास और सामान बिल्कुल सादा था। मुस्लमानों ने यह सोच कर कि ईसाई क्या कहेंगे आप रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ीमती पोशाक दी लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा ने हम को जो इज़्ज़त दी है वह इस्लाम की इज़्ज़त है और हमारे लिए यही काफ़ी है।

ईसाई पादरियों ने ख़ुद शहर की चाबियाँ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द कीं। सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मस्जिद अक्सा गए। फिर ईसाइयों के गिरजा में आए और इस को देखते रहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ईसाइयों के गिरजा की सैर की। नमाज़ का समय हुआ तो ईसाइयों ने गिरजे में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ख़्याल से कि आइन्दा नसलें इसको हुज्जत क़रार देकर मसीही इबादतगाहों में दस्त अंदाज़ी न करें बाहर निकल कर नमाज़ पढ़ी।

ईलिया में क़ियाम के दौरान मुस्लमान लश्कर के अमीरों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की दावतें करना शुरू कर दीं। वे खाना तैयार करते और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से दरख़ास्त करते कि उनके ख़ेमा में तशरीफ़ लाएंगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई करते हुए उनकी दावत को क़बूल फ़रमाते जबकि हम हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हों हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़याफ़त नहीं की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि तुम्हारे सिवा लश्कर के अमीरों में से कोई ऐसा अमीर नहीं जिसने मेरी दावत नहीं की हो। इस पर हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : हे अमीरुल मोमेनीन मैं डरता हूँ कि यदि मैं ने आपकी दावत की तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु आपनी आँखों पर क़ाबू नहीं रख सकेंगे अर्थात भावुक हो जाऐंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस के बाद उनके ख़ेमा में गए तो क्या देखते हैं कि उस में कुछ भी नहीं है सिवाए हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो के घोड़े के नमदे के और वही उनका बिस्तर था और उनकी ज़ीन थी और वही उनका तकिया था। ज़ीन को तकिया बना लेते थे और जो नमदा था ज़ीन के नीचे रखने वाला उसको वह बिस्तर बना लेते थे और उनके ख़ेमे के एक कोने में ख़ुशक रोटी थी। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो उसे लाए और उसे ज़मीन पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने रख दिया। फिर वह नमक और मिट्टी का पियाला लाए जिस में पानी था। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह मंज़र देखा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथ चिमटा लिया और फ़रमाया तुम मेरे भाई हो।

और मेरे साथियों में से कोई एक भी नहीं परन्तु उसने दुनिया से कुछ हासिल किया और दुनिया ने भी उस से कुछ हासिल किया हो सिवाए तुम्हारे। इस पर अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि क्या मैंने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में पहले अर्ज़ नहीं कर दिया था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास अपनी आँखों पर क़ाबू नहीं रख सकेंगे।

इसके बाद फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बाहर निकल के लोगों में खड़े हुए और अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की जिसका वह हक़दार है और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने के बाद फ़रमाया। हे इस्लाम वालों नि संदेह अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच्चा कर दिखाया है और उसने दुश्मनों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद की है और तुम्हें इन देशों का वारिस बना दिया है और तुम्हें ज़मीन में गौरव प्रदान किया है। अत: तुम्हें अपने रब की नेअमतों पर शुक्र बजा लाना चाहिए। तुम लोग ना-फ़रमानी वाले कामों से दूर रहो क्योंकि ना-फ़रमानी वाले काम नेअमतों की नाशुक्री है और बहुत कम ऐसा हुआ है कि अल्लाह किसी क़ौम पर इनाम करे और वे नाशुक्री करें। फिर वे जल्द तौबा न करें परन्तु ज़रूर उनकी इज़्ज़त खत्म कर ली जाती है। अर्थात यदि नाशुक्री करने के बाद तौबा नहीं करते तो फिर उनका सम्मान नष्ट हो जाता हैं, ख़त्म हो जाती हैं। उनके इनामात वापस हो जाते हैं और उन पर उनके दुश्मनों को मुसल्लत कर दिया जाता है। क्योंकि ईलिया में अक्सर अफ़सरान-ए-फ़ौज और अमाल जमा हो गए थे इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कई दिन तक क़ियाम किया और ज़रूरी अहकाम जारी किए।

एक दिन हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने आकर शिकायत की कि हे अमीरुल मोमेनीन हमारे अफ़सर परिंदे का गोश्त और मैदे की रोटियाँ खाते हैं लेकिन आम मुस्लमानों को मामूली खाना भी नसीब नहीं होता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अफ्सरान से इस के सम्बन्ध में दरयाफ़त किया तो उन्होंने अर्ज़ किया कि समस्त चीज़ें यहां बहुत सस्ती हैं। जितनी क़ीमत पर हिजाज़ में रोटी और खजूर मिलती है यहां इसी क़ीमत पर परिंदे का गोश्त और मैदा मिलता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अफ्सरान को भी मजबूर नहीं किया कि तुमने यह नहीं खाना परन्तु इस बात का हुक्म दे दिया कि माल-ए-ग़नीमत और तनख़्वाह के अतिरिक्त हर सिपाही का खाना भी निर्धारित कर दिया जाए। तनख़्वाह के अतिरिक्त उनको खाना भी दिया जाए जो सिपाही हैं। इस की मज़ीद तफ़सील एक जगह यूं वर्णन हुई है कि हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे कि हमारे शहरों का नर्ख़ सस्ता है। इसी क़ीमत में जिस में हम लोग एक मुद्दत तक गुज़ारा कर सकते हैं ये चीज़ें जिसे हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन कर रहे हैं मिल जाती हैं। हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया यदि ये बात है तो ख़ूब मज़े से पेट भर कर खाओ। मैं उस समय तक यहां से वापस नहीं जाऊँगा यहां तक कि तुम मेरे सामने चीज़ों की और क़ीमतों की फ़हरिस्त पेश ने कर दो। मैं शहरों और देहातों में रहने वाले कमज़ोर मुस्लमानों के लिए बजट लिख कर देता हूँ। फिर जिस मुस्लमान को जितनी ज़रूरत होगी उस बजट में से हर घर के लिए गंदुम और जो और शहद और ज़ैतून इत्यादि अदा कर दिया करो। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन कमज़ोर और कम सरमाया-दार मुस्लमानों से सम्बोधित हो कर फ़रमाया : मैंने तुम्हारे लिए जो फ़हरिस्त तैयार की है तुम्हारे सरदार तुम्हें ये सब कुछ दिया करेंगे और ये सब कुछ इसके अतिरिक्त होगा जो मैं बैतुल माल से तुम्हारे लिए भेजा करूँगा। यदि कोई सरदार तुम्हें ये चीज़ें नहीं दे तो मुझे सूचना देना। फिर मैं तुरंत ही उसे माज़ूल कर दूँगा। ईलिया में क़ियाम के दौरान एक दफ़ा नमाज़ का समय हुआ तो लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से इसरार किया कि वह हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को अज़ान देने का हुक्म दें।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं अज़म कर चुका था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद किसी के लिए अज़ान नहीं दूँगा लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु का इरशाद बजा लाऊँगा। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब अज़ान दी तो समस्त सहाबा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़माना याद आ गया और उन पर इतनी रिक़्क़त तारी हुई कि वह रोते-रोते बेताब हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी इतने बेताब हुए कि हिचकी बंध गई और देर तक इस का प्रभाव रहा। बैतुल-मुक़द्दस से वापसी के समय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त मुल्क का दौरा किया और सरहदों का मुआइना करके मुल्क की हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम किया।

(उद्धरित अल् फ़ारूक़ अज़ शिबली पृष्ठ 125-126 इदारा इस्लामियात कराची 2004 ई.) (फ़ुतूह अलशामि अनुवादक भाग 2 पृष्ठ 224 मकतबा आला हज़रत दरबार मार्कीट लाहौर, सितंबर 2008 ई.) (ख़ुलफ़ाए राशिदीन पृष्ठ 126-127 मकतबा रहमान लाहौर)(الاكتفاء بما تضمنه من مغازى رسول الله ﷺ والثلاثة الخلفاء भाग 2 हिस्सा प्रथम पृष्ठ 295- 296 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

"बैतुल-मुक़द्दस तशरीफ़ लाने से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया। इसलिए जिस रस्ते से आप रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए थे उसी रस्ते से मदीना वापस हो गए। जाबिया पहुंच कर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो" ने कुछ दिन क़ियाम फ़रमाया और इसके बाद अपने घोड़े पर रवाना हो गए। अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिलिस्तीन में जो काम किए थे उनकी सूचना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और दूसरे मुस्लमानों को मिल चुकी थी। इसलिए मदीने के बाहर उन्होंने आप रज़ियल्लाहु अन्हु का शानदार स्वागत किया।"

(हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक पृष्ठ 382 प्रकाशन इस्लामी पुस्तकों ख़ाना लाहौर)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मस्जिद नब्वी में दाख़िल हुए और मिंबर के पास दो रकात नमाज़ अदा की फिर मिंबर पर चढ़े और लोग आपके इर्द-गिर्द जमा हो गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने के बाद फ़रमाया। हे लोगो! यक़ीनन अल्लाह ने इस उम्मत पर एहसानात किए हैं ता कि वे लोग

उसकी प्रशंसा वर्णन करें और उस का शुक्र अदा करें। अल्लाह ने इस उम्मत के संदेश को इज़्ज़त दी और उनको मुत्तहिद कर दिया और उनकी फ़तह ज़ाहिर की और दुश्मनों के ख़िलाफ़ उनकी मदद की और उसे इज़्ज़त बख़शी और उसे ज़मीन में गौरव प्रदान किया और उसे मुशरेकीन के इलाक़ों और उनके घरों और उनके अम्वाल का वारिस बना दिया। अत: हर वक़त अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहो वे तुम्हें और अत्याधिकत अता करेगा और उन नेअमतों पर अल्लाह की हमद वर्णन करो जो उसने तुम पर नाज़िल की हैं। वह हमेशा उन नेअमतों को तुम पर क़ायम रखेगा। अल्लाह हमें और तुम्हें शुक्रगुज़ारों में से बना दे। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मिंबर से नीचे उतर गए।

(अल इक्तेफ़ा बिमा तज़मिना मिन मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 2, हिस्सा प्रथम पृष्ठ 305-306 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1997 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "यरोशलम के घेराव में पादरियों ने कहा तुम्हारा ख़लीफ़ा आवे तो उसे हम दख़ल दे दें'' दख़ल दे देंगे "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इसी सादगी में रवाना हुए। ग़ुलाम के साथ बारी बारी ऊंट पर चढ़ते आते थे। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया आप कपड़े बदल लें। घोड़े पर सवार हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये अर्ज़ मान ली परन्तु थोड़ी दूर जा कर घोड़े से उतर बैठे। कहा मेरा वही लिबास और ऊंट लाओ। आप जब गए तो बत्रीक़ इत्यादि ने रोब में आकर चाबियाँ फेंक दें। कहा इस सिपहसालार का मुक़ाबला हम नहीं कर सकते।''

(हकायकुल फुर्कान भाग 2 पृष्ठ 174) अपने रंग में हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि "यरोशलम में एक मस्जिद है वह स्थान यहूदियों के लिए ऐसा ही मुतबर्रिक है जैसा हमारे लिए ख़ाना काअबा। मुस्लमानों के ज़माना में जब यरोशलम फ़तह हुआ तो ईसाइयों ने चाहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इस स्थान के अंदर आकर नमाज़ पढ़ें परन्तु फ़रमाया : मैं डरता हूँ कि यदि मैंने अंदर नमाज़ पढ़ी तो मुस्लमान उस जगह को अपनी इबादत-गाह बना लेंगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने बाहर नमाज़ पढ़ी।"

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 11 पृष्ठ 437 ख़ुतबा जुम्मा फ़र्मूदा 27 जुलाई 1928 स्थान डलहौज़ी)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में फिलिस्तीन फ़तह हुआ और जिस समय आप यरुशलम गए तो यरुशलम के पादरियों ने बाहर निकल कर शहर की कुंजियाँ आपके हवाले कीं और कहा कि आप अब हमारे बादशाह हैं। आप मस्जिद में आकर दो नफ़ल पढ़ लें ताकि आपको तसल्ली हो जाए कि आपने हमारी मुक़द्दस जगह में जो आपकी भी मुक़द्दस जगह है नमाज़ पढ़ ली है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं तुम्हारी मस्जिद में इस लिए नमाज़ नहीं पढ़ता कि मैं इनका ख़लीफ़ा हूँ, कल को ये मुस्लमान इस मस्जिद को छीन लेंगे और कहेंगे कि यह हमारी मुक़द्दस जगह है इस लिए मैं बाहर ही नमाज़ पढ़ूँगा ताकि तुम्हारी मस्जिद न छीनी जाए।" (तफ़सीर-ए-कबीर भाग 5 पृष्ठ 573)

बहरहाल सतरह हिज्री में रोमियों की तरफ़ से एक आख़िरी कोशिश हुई और इस कोशिश की वजह से ही मुस्लमानों की शाम पर मुकम्मल फ़तह भी हुई। इस्लामी फ़ुतूहात चूँकि दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती थीं और हुकूमत-ए-इस्लाम के हदूद बराबर बढ़ते जाते थे, पड़ोसी सल्तनतों को ख़ुद बख़ुद ख़ौफ़ पैदा हुआ कि एक दिन हमारी बारी भी आती है। इसलिए जज़ीरा वालों ने जो इराक़ और शाम के मध्य आबाद थे यज़दर्ज के रै फ़रार हो जाने के बाद वह उस की तरफ़ से मायूस हो गए थे। इसलिए उन्होंने हरक़्ल को लिखा कि यदि वह मुस्लमानों से लड़ने और उन्हें उनके मक़बूज़ात से निकाल बाहर करने के लिए बहरी रास्ते से लश्कर भेजे तो वह उस की मदद करेंगे। हरक़्ल ने इस मसला पर ग़ौर किया और इस नतीजा पर पहुंचा कि इस में नुक़्सान का कोई पहलू नहीं है। जज़ीरा वालों ने हरक़्ल को दुबारा ख़त लिखा जिससे वह समझ गया कि उनके इरादे में कोई झोल नहीं है। उसने देखा कि उनमें से अक्सर ईसाई अरब अपने मज़हब का दामन मज़बूती से पकड़े हुए हैं और इस की राह में लड़ के मर जाना बेहतर समझते हैं। हरक़्ल को शाम के मैदान-ए-कार-ज़ार से दूर हुए एक वर्ष से अधिक हो गया था इसलिए अब उस के दिल में वह पहला के तरह का ख़ौफ़ भी बाक़ी नहीं रहा था। फिर उसने देखा कि बहुत से सरहदी इलाक़े अभी इतने मज़बूत हैं कि मुस्लमानों के हमलों की ताब ला सकते हैं, मुक़ाबला कर सकते हैं। इस का जंगी बेड़ा भी हनूज़ महफ़ूज़ था और वह यह भी जानता था कि मुस्लमान समुंद्र और समुंद्र की तरफ़ से आने वाली हर चीज़ से डरते हैं। इससे इस के इरादे में क़ुव्वत पैदा हुई और वो अहले जज़ीरा का मुतालिबा तस्लीम कर लेने पर मायल हो गया। उसने अपने ख़त में इन क़बायल को जोश दिलाया। उनकी हिम्मतें बढ़ाईं और लिखा कि जहाज़ों को हुक्म दे दिया गया है। वह फ़ौज और जंग का सामान लेकर सिकंदरीया से अन्ताकिया पहुंच रहे हैं। हरक़्ल का पत्र मिलने पर ये क़बायल अपनी तीस हज़ार की फ़ौज लेकर जज़ीरा से हम्स की तरफ़ रवाना हो गए।

हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को इन समस्त बातों की सूचना मिली। उन्होंने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को मश्वरे के लिए क़िन्निसरीन से बुलाया और इन दोनों सिपहसालारों ने मिलकर फ़ैसला किया कि दुश्मन से मुक़ाबला करने के लिए समस्त इस्लामी फ़ौजें शुमाली शाम में जमा हो जाएं। इसलिए अन्ताकिया और हमामा, हलब और क़रीब की समस्त फ़ौजी छावनियों के लश्कर हम्स में इकट्ठे कर दिए गए। उधर सारे मुल्क में यह ख़बर फैल गई कि हरक़्ल की फ़ौजें समुद्री मार्ग से आ रही हैं और जज़ीरा के क़बायल हमले के लिए हम्स की तरफ़ रवाना हो गए हैं इसलिए गर्दनें बढ़ा बढ़ा कर लोग एक दूसरे से पूछने लगे कि क़ैसर और इ के हलीफ़ों का यह नया हमला किस चीज़ से रोका जाएगा और जब हरक़्ल के जहाज़ अन्ताकिया पहुंचे तो शहर के दरवाज़े फ़ौज के लिए खुल गए। रियाया मुस्लमानों के ख़िलाफ़ हो गई और समस्त शुमाली शाम में बग़ावत के शोले भड़कने लगे। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने आपको हम्स में केदी पाया जिसे बागियों ने चारों तरफ़ से घेर लिया था और दुश्मनों को समुंद्र और सहरा दोनों तरफ़ से अपनी सिम्त बढ़ते देखा था। उन्होंने अपने साथियों को जमा किया और कहा कि मैंने अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में एक याचिका भेजी है जिसमें इस नाज़ुक मरहले पर उनसे मदद तलब की है। इसके बाद उनसे पूछा कि मुस्लमान दुश्मनों से बाहर निकल कर मुक़ाबला करें या मदीना से आने वाली सहायता के इंतिज़ार में क़िला बंद हो कर लड़ें। केवल ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मैदान से निकल कर लड़ने का मश्वरा दिया बाक़ी समस्त फ़ौजी अफ्सरान की यह राय थी कि क़िला बंद हो कर जल्द से जल्द सहायता तलब करनी चाहिए। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन लोगों की राय क़बूल कर ली जिन्हों ने क़िला बंद होने को कहा था और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो हिम्ज़ के मश्वरे से मतभेद किया कि बाहर निकल के लड़ा जाए। इसलिए मोर्चों को और मज़बूत कर के ख़िलाफ़त के दरबार में में अपने साथियों की राय लिख भेजी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस बात को कभी फ़रामोश नहीं होने देते थे कि इराक़ और शाम के इस्लामी लश्करों को यदि कभी इस किस्म का ख़तरा दरपेश आ गया तो इस्लामी फ़ुतूहात इसी इबतिला से दो-चार हो जाएँगी जिनका सामना हो रहा था और जिससे वह अपनी ख़िलाफ़त के दिन से दो-चार थे अर्थात शुरू दिन की जो हालत थी वह अब भी हो सकती थी। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बस्रा और कूफ़ा आबाद करने का हुक्म दिया था और इसी लिए इन दोनों शहरों को मुस्लमानों की फ़ौजी छावनियां बनाई थी कि जहां कोई ग़ैर मुस्लिम आबाद नहीं था। इसके अतिरिक्त दूसरे सात शहरों में से हर शहर में चार हज़ार सवार निर्धारित किए थे जो हर वक़त इस किस्म की हंगामी ज़रूरियात के लिए कील कांटे से लैस रहते थे। इसलिए जब हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़त बारगाहे ख़िलाफ़त में पहुंचा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने महसूस किया और फ़रमाया कि मुस्लमानों का यह अज़ीम सिपहसालार एक बहुत बड़े ख़तरे में घिर गया है तो हज़रत साद बिन अबी वक़ास को फ़ौरी हुक्म देकर रवाना किया कि जिस दिन तुम्हारे पास ख़त पहुंचे उसी दिन काअका बिन अम्र को मदद करने वाली फ़ौज के साथ हम्स भेज दो, अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो वहां महसूर हैं। जितनी जल्दी और जितनी तेज़ी से मुम्किन हो सहायता उन्हें पहुंच जानी चाहिए। हज़रत साद मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसी दिन अमीरुल मोमेनीन के हुक्म की तामील की और काअका सरकर्दगी में चार हज़ार अनुभवी सवारों की फ़ौज प्रदान कर के कूफ़ा से हम्स की तरफ़ चल पड़े। मुआमला इतना ख़तरनाक था कि महिज़ चार हज़ार फ़ौज लेकर काअका उस के मुक़ाबले के लिए चले जाना काफ़ी नहीं था क्योंकि जज़ीरे से हम्स आने वालों की संख्यां तीस हज़ार थी और वे फ़ौज उसके अतिरिक्त थी जो हरक़्ल ने बहरी जहाज़ों के माध्यम अन्ताकिया भेजी थी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जानते थे कि उनके आदमी शाम के हर शहर में वहां के लोगों से निपट रहे हैं। यदि वे इन शहरों को छोड़कर हम्स चले गए तो सारे शाम का निज़ाम दरहम-बरहम हो जाएगा। इसलिए उन्होंने काअका को कूफ़ा से

रवानगी का हुक्म देने के बाद और भी अहकाम सादर किए जो उनके तदब्बुर और दूर अंदेशी के आईनादार थे। जज़ीरे से हम्स आने वाले क़बायल ने यह साहस इसलिए किया था कि वे जानते थे कि उनकी बस्तिया इस्लामी हमलों की ज़िद से बाहर हैं। अत: यदि इन बस्तियों पर हमला कर दिया जाए तो ये क़बायल उल्टे पांव वापस हो जाऐंगे और अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो और उनकी फ़ौजों पर जो दबाव बढ़ रहा था इस में तख़फ़ीफ़ हो जाएगी। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़त में लिखा कि सुहेल बिन अदी की सरकर्दगी में एक फ़ौज जज़ीरा के शहर रुका में भेज दो। जज़ीरा के लोगों ने ही रोमियों को हम्स पर हमला के लिए उभारा है और उनसे पहले काअका के बाशिंदे यही हरकत कर चुके हैं। दूसरी फ़ौज अब्दुल्लाह बिन अत्बान सरकर्दगी में नसीबेन पर चढ़ाई के लिए रवाना कर दो। यहां के लोगों को भी अहले करकीसिया ने हमले के लिए उकसाया था। फिर हर्रान जो जज़ीरे का पाया तख़्त था और रुहा जा कर वहां से दुश्मन को निकाल दें। हर्रान और रुहा जा कर वहां से दुश्मन को निकाल दें। एक तीसरी फ़ौज वलीद बिन उक्बा की कमान में जज़ीरा के ईसाई अरब क़बायल रबीया और तनूख़ की जानिब रवाना करो और इयाज़ बिन ग़नम को इसी जज़ीरा के महाज़ पर भेजो। यदि जंग हो तो दूसरे फ़ौज के सालार इयाज़ बिन ग़नम के अधीन होंगे। इसलिए जब ये सब के सब सिपहसालार रवाना हुए तो जज़ीरा वालों ने हम्स का घेराव छोड़कर जज़ीरे को चल दिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ये पालिसी, स्ट्रैटजी थी, हिक्मत-ए-अमली थी कि बजाय वहां इकट्ठे हों कुछ फ़ौजें जिन इलाक़ों से ये फ़ौजें इकट्ठी हुई थीं इन शहरों और इलाक़ों में भेज दो जिस का नतीजा यह हुआ जब उन्होंने देखा कि मुस्लमान तो हमारे इलाक़ों में और जज़ीरों में और शहरों में आ रहे हैं तो ये लोग फिर घेराव छोड़ के वहां से चले गए। लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिर उसी पर इकतिफ़ा नहीं किया। उन्होंने अंदाज़ा फ़र्मा लिया था कि बार-बार शिकस्तें खाने के बाद हरक़्ल ने यह जो समुद्री रास्ते से फ़ौजें भेजी हैं इस की वजह यह है कि उसे अपनी क़ुव्वत पर विश्वास किया है और वह यक़ीन रखता है कि इस में तन्हा मुस्लमानों के मुक़ाबले की क़ुदरत है। इस का सबसे बड़ा सबूत यह है कि सिकंदरिया से जहाज़ों पर आने वाली फ़ौजों का कमांडर उसने अपने बेटे किस्तनतीन को बनाया है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की प्लैनिंग के अनुसार काअका बिन अम्र अपने साथ चार हज़ार शहसवारों को लेकर हम्स रवाना हुए। सुहेल बिन अदी, अब्दुल्लाह बिन अत्बान, वलीद बिन उक्बा और अयाज़ बिन ग़नम जज़ीरा वालों की भर्त्सना के लिए उनके विभिन्न शहरों में चले गए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हम्स के इरादे से मदीना छोड़ा और जाबिया में मुक़ीम हुए। जज़ीरा वालों ने हम्स का घेराव करने में रोमियों का साथ दिया। उन्हें इराक़ से इस्लामी फ़ौज की आमद की सूचना हो गई लेकिन वह यह नहीं जानते थे कि यह फ़ौज हमारे शहर जज़ीरा पर हमला करेगी या हम्स पर इसलिए वह अपने शहर और अपने भाईयों की हिफ़ाज़त में लग गए और रोमियों का साथ छोड़ दिया।

एक दिन हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो जब सो कर उठे तो मालूम हुआ कि जज़ीरे के क़बायल अपने मुल्क वापस चले गए हैं और उनके मुक़ाबले पर केवल हरक़्ल का लश्कर रह गया है। उन्होंने अपनी फ़ौज से सरदारों को बुला कर कहा कि वह रोमियों के मुक़ाबले के लिए मैदान में निकलना चाहते हैं। यह सुनकर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो बहुत ख़ुश हुए और कहा कि इस से पहले कि रूमी इस नई सूरत-ए-हाल का कोई इंतिज़ाम करें उन पर तुरंत हमला कर देना चाहिए। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने लश्कर के सिपाहीयों से एक जोशीला ख़िताब किया और मुसलमानो! आज जो साबित-क़दम रह गया वह यदि ज़िंदा बच्चा तो मुल्क और माल उस को मिलेगा और यदि मारा गया तो शहादत की दौलत मिलेगी और मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो व्यक्ति इस हाल में मरे कि वह मुशरिक न हो तो वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। फ़ौज पहले ही से हमले करने के लिए बेक़रार थी। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो की तक़रीर ने और भी गर्मा दिया और तुरंत सबने हथियार सँभाल लिए। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौज के बीच में और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो मैमना और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो मुयस्सरा को लेकर बढ़े। दोनों गिरोहों में जंग हुई तो मुस्लमानों के मुक़ाबले में थोड़ी ही देर में रोमियों के पैर उखड़ गए और वे शिकस्त खा गए। जब कअका बिन अम्र को कूफ़ा की फ़ौज के साथ हम्स पहुंचे तो लड़ाई ख़त्म हुए तीन दिन गुज़र चुके थे। दूसरी तरफ़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो शाम के रास्ते से जाबिया पहुंचे ही थे कि हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो का क़ासिद मिला और उसने वर्णन किया कि कअका के हम्स पहुंचने से तीन दिन पहले ही अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को रोमियों पर विजय कर दिया है और राय मालूम की कि कअका और उस की फ़ौज को माल-ए-ग़नीमत में से हिस्सा दिया जाए या न दिया जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो संतुष्ट हो गए और इस ख़बर के बाद सफ़र जारी रखने की ज़रूरत महसूस नहीं फ़रमाई। वहीं से हज़रत अमीन अल् उम्मत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को पत्र लिखा कि अहल-ए-कूफ़ा को माल-ए-ग़नीमत की तक़सीम में शरीक किया जाए क्योंकि उनकी आमद की ख़बर ही ने दुश्मन के दिल पर रोब तारी किया था जिसकी वजह से उसने शिकस्त खाई। अल्लाह कूफ़ा वालों को उत्तम प्रतिफल दे कि अपने इलाक़े की हिफ़ाज़त और दूसरे शहर-वालों की सहायता करते हैं और इस के बाद मदीना की तरफ़ कूच फ़र्मा दी। इस शिकस्त के बाद क़ैसर पर इतनी मायूसी छा गई कि वह फिर कभी शाम का रुख नहीं कर सका। उधर बागियों को जब मालूम हुआ कि रूमी फ़ौजें जहाज़ों में बैठ कर फ़रार हो गई हैं तो उनकी बग़ावत भी अपनी मौत आप मर गई। यह सतरह हिज्री का वाक़िया है। इस के तीन वर्ष बाद हरक़ल 20 हिज्री को 641 ईसवी में फ़ौत हो गया।(सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ हैकल। अनुवादक हबीब अशअर पृष्ठ 384 से 390 - 590 इस्लामी पुस्तक ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर) सीरत अमीरुल मोमेनीन उमर बिन खत्ताब अज़ अल् सलाबी पृष्ठ 750 से 752 अल् फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ ज़िला मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान) (उल-फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी पृष्ठ 134 से 136 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

बहरहाल यह वर्णन अभी आगे भी चलेगा। इंशा अल्लाह। इस समय मैं चंद मरहूमीन का भी वर्णन करना चाहता हूँ जिस में पहला वर्णन आदरणीय चौधरी सईद अहमद लखन साहिब रिटायर्ड स्टेशन मास्टर का है जो आजकल कैनेडा में थे। 86 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत चौधरी सिकन्दर अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत गुज्जर बी-बी साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते थे। हज़रत चौधरी सिकन्दर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने 30 मार्च 1902 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की थी और 1904 ई. से 1928 ई. तक मदरसा तालीमुल इस्लाम में शिक्षा का फ़र्ज़ पूरा करने की तौफ़ीक़ मिली। आप उन आरंभिक अध्यापकों में से थे जिनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी ज़िंदगी में मदरसा तालीमुल इस्लाम में उस्ताद निर्धारित फ़रमाया था। चौधरी सईद साहिब उनके पोते थे। यह भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दीनी ख़िदमात अंजाम देते रहे जब अवसर मिला। चौधरी सईद साहिब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। पीछे रहने वालों में में पत्नी के अतिरिक्त छ: बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। सब बच्चे किसी न किसी रंग में इस नेक तर्बीयत की वजह से जो उन्होंने अपने बच्चों की की, जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। आपके एक बेटे फ़हीम अहमद लखन कीनीया में मुरब्बी सिलसिला हैं और वहां ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपने पिता के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उनको सब्र और हौसला अता फ़रमाए और मरहूम के साथ मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

मरहूम बहुत दीनी ग़ैरत रखने वाले इन्सान थे। शिक्षा प्राप्त करने के ज़माने में 1953 ई. में समुंद्री शहर के हाई स्कूल में होने वाले मज्लिस अहरार के जल्से में अन्य ग़ैर अहमदी विद्यार्थियों के साथ मौजूद थे। जब अताउल्लाह शाह बुख़ारी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर बेहूदा आरोप लगाए और आप अलैहिस्सलाम के बारे में अनुचित शब्द इस्तिमाल किए तो सईद साहिब तुरंत खड़े हो गए और इस मौलवी को ललकारा और उसकी तक़रीर के दौरान ही इस से सम्बोधित हुए कि तुम केवल झूठ बोल रहे हो और उसे चुप करवा दिया। इस पर मौलवी ने कहा इस

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मिर्ज़ाई को पकड़ो और मॉरो। आप पर शदीद अत्याचार किया गया लेकिन बहरहाल इस दौरान जलसे में भगदड़ मच गई और जलसा मुंतशिर हो गया। हमेशा अपनी औलाद को यह तलक़ीन करते थे कि अहमदियत के मुआमला में कभी किसी से दबना या डरना नहीं है।

दूसरा वर्णन आदरणीय मुहम्मद शाहाबुद्दीन साहिब नायब नैशनल अमीर बंगला देश का है। उनकी वफ़ात 12 जुलाई को हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अठारा वर्ष की आयु में 1964 ई. में एक ख़ाब की बिना पर उन्होंने अहमदियत क़बूल की थी। मरहूम मूसी थे। सिलसिला के देरीना खादिमों में से थे। बहुत सारी ख़ूबियों के मालिक थे। ख़िलाफ़त के शैदाई, ईमानदार, अमानतदार, ख़ामोश स्वभाव वाले और जमाअत और सिलसिला के मुफ़ाद को अच्छी तरह समझने वाले थे। अपनी वफ़ात से पहले वसीयत के चंदे इत्यादि का हिसाब साफ़ करके गए। उनके बड़े बेटे शम्सुद्दीन अहमद मासूम साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। मरहूम की औलाद में चार बेटों के अतिरिक्त तीन बेटियां भी हैं। मरहूम अपने चचा की तब्लीग़ से मुतास्सिर हो कर अहमदी हुए थे और अपने घर में शदीद मुख़ालिफ़त का सामना भी करना पड़ा और सब्र और इस्तिक़लाल से 1963 ई. में चंद माह ये सब मुख़ालिफ़त बर्दाश्त की और इसके बाद घर-बार छोड़कर पहले ब्राह्मण बढ़िया और फिर ढाका आकर बस गए। बाद में उनकी शादी पुराने अहमदी ख़ानदान में हुई। एक ख़ुसूसीयत उनकी कम धन में सादा जीवन व्यतीत करना थी। थोड़े पर राज़ी रहना और सब्र और शुक्र के साथ गुज़ारा करना जानते थे। उनकी दियानतदारी की वजह से ग़ैर अहमदी ताजिर भी उनकी बड़ी इज़्ज़त किया करते थे और सब उनको इस लिहाज़ से बहुत नेक और सही तिजारत करने वाला समझते थे। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन है मुहतरम राऊल अब्दुल्लाह साहिब का जो अर्जनटाइन के रहने वाले थे। यह अर्जेंटीना के थे। 6 सितंबर को उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। वहां के मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं कि जमाअत अहमदिया अर्जनटाइन के आरंभिक अहमदियों में से थे। अर्जनटाइन की जमाअत बिल्कुल नई जमाअत है। चंद वर्ष पहले क़ायम हुई है। जमाअत अहमदिया से उनका पहला परिचय 2018 ई. में एक बुक फेयर पर हुआ था। जब उनका जमाअत से सम्पर्क हुआ तो उनके ग़ैर अज़ जमाअत मुस्लमान दोस्तों ने उनको जमाअत से पीछे करना चाहा लेकिन आप इसके बावजूद बाक़ायदा जमाअत के प्रोग्रामों में शामिल होते रहे। बहरहाल इन दोस्तों के प्रभाव की वजह से उनके दिल में कुछ संदेह और आपत्ति भी थे जिसको दूर करने के लिए यह जलसा सालाना यू.के में शामिल हुए और अपने ज़ाती ख़र्च पर यहां आए और यहां फिर उनकी मेरे से मुलाक़ात भी हुई और इस मुलाक़ात के बाद फिर उनका संदेह और आपत्ति भी दूर हो गई और मुकम्मल शरह सदर उनको हासिल हुआ और उन्होंने बैअत भी कर ली और बैअत से पहले भी असल में तो यह अहमदी थे, लोगों को अहमदियत की तब्लीग़ किया करते थे लेकिन बाक़ायदा बैअत उन्होंने फिर यहां आकर की। अपनी फ़ैमिली में वाहिद मुस्लमान थे। उनके दोस्तों ने आख़िरी समय तक उन्हें जमाअत से दूर करने की कोशिश की लेकिन इस्तिक़ामत के साथ अहमदियत पर क़ायम रहे। जमाअत के लिए बड़ी ग़ैरत रखते थे और हमेशा अपनों और ग़ैरों के सामने बड़े गर्व से अपना परिचय बतौर अहमदी के करवाते थे। जमाअती कार्यों में बड़े इख़लास और भरपूर भावना से शामिल होते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके क़रीबियों और अज़ीज़ों को भी अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

नमाज़ों के बाद इनके नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

प्रशासनिक अमर की तरफ़ तवज्जा दिला रहे हैं कि जब अपने लोगों में से किसी को इमाम बना दिया जाए तो उस के कामों में तजस्सुस कर के ख़ामियाँ तलाश करने की कोशिश न किया करो बल्कि पूरी इताअत के साथ उस की इक़तिदा में नमाज़ अदा करके उस की स्वीकारयत का मामला ख़ुदा तआला पर छोड़ दिया करो।

प्रश्न: हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ स्विटज़रलैंड की नैशनल मज्लिस-ए-आमला की तिथि 7 नवंबर 2020 ई. को होने वाली virtual मुलाक़ात में एक मैंबर आमला ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तीन अंगूठियां बनवाई थीं, दो अंगूठियां हमने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दस्त-ए-मुबारक में देखी हैं, तीसरी अँगूठी किस के पास है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस का उत्तर अता फ़रमाते हुए फ़रमाया :

उत्तर : لَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ वाली अँगूठी हज़रत अम्माँ-जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को दे दी थी और दूसरी अँगूठी जिस पर رَسُتُ لَكَ بِيَدِیْ رَحْمَتِیْ وَقُدْرَتِیْ का इल्हाम दर्ज था, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब को देदी थी और "मौला बस" वाली अँगूठी हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को दे दी थी। أَلَيْسَ اللّٰهُ वाली अँगूठी जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को दी थी, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने वसीयत की थी कि मेरे बाद यह अँगूठी जो भी ख़लीफ़ा बनेगा, उस को मिलेगी और बजाय ज़ाती होने के ख़िलाफ़त को स्थानांतरित हो जाएगी। लेकिन जो दूसरी दो अंगूठियां थीं वे दोनों भाईयों ने अपने पास रखी। हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब की अँगूठी जो थी उनकी वफ़ात के बाद मेरे पिता साहब के पास आई। इसके बाद मेरी माता ने उनकी की वफ़ात के बाद मुझे देदी। और फिर अल्लाह तआला ने जब ख़िलाफ़त का मन्सब दिया तो मैंने वह अँगूठी पहननी भी शुरू कर दी। तीसरी अँगूठी जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास थी, वह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद हज़रत मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र अहमद साहब को स्थानांतरित हो गई थी। हज़रत मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र अहमद साहब की कोई औलाद नहीं थी तो उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी अम्तुल जमील साहिबा और मुहतरम नासिर अहमद स्याल साहब इब्न हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे को ले पालक बनाया था,और वह उनके साथ रहा, उनके घर में पला-बढ़ा, तो उस के बाद उन्होंने वह अँगूठी उस को दीदी वह आजकल अमरीका में रहते है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस
ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।
(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)
तालिबे दुआ
मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन
"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"
(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)
तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 1 का शेष

Virtual क्लास

समस्त मेम्बरात प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ अदा करने वाली हों, आदर्श मुस्लिम महिला हों, बच्चों की अच्छी परवरिश करने वाली हों ताकि वे नेक बनें (हुज़ूर अनवर)

अल्हम्दोलिल्ला कि यह मुलाक़ात रूहानियत से भरपूर, बेदार करने वाली और बहुत बाबरकत थी (सदर लजना)

नैशनल आमिला लजना इमाइल्लाह घाना की हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तिथि 24 जनवरी 2021 ई. को पश्चिमी अफ्रीक़ा के मलिक घाना की लजना इमाइल्लाह की नैशनल आमिला को अपने प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात की सआदत नसीब हुई। यह मुलाक़ात एम.टी.ए के वहाब आदम स्टूडियो स्थान बुस्तान-ए-अहमद हुई।

मुलाक़ात के प्रारम्भ में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई जिसके बाद समस्त आमिला की मेम्बरात ने अपना परिचय करवाया और मुख़्तसर रिपोर्ट पेश की और अपने विभाग के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से हिदायात लीं। अंत पर आदरणीया सदर साहिबा लजना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का मज्लिस-ए-आमला की तरफ़ से इस इज़्ज़त अफ़ज़ाई पर शुक्रिया अदा किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सबको अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू कहा और यह मीटिंग अपने समापन को पहुंची। इस मुलाक़ात में कुल 41 आमिला मेम्बरात ने शिरकत करने का सौभाग्य पाया।

★ नैशनल सदर साहिबा लजना इमाइल्लाह घाना ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि वह महसूस कर रही थीं कि बहुत सआदत की घड़ी है परन्तु इसके साथ बहुत फ़िक्र भी थी। हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ इंतिहाई शफ़क़त और मुहब्बत से हम से सम्बोधित हुए। उदाहरणत: मुलाक़ात के आख़िर पर प्यारे हुज़ूर ने सैक्रेटरी ज़याफ़त से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि उन्होंने मुलाक़ात के बाद लजना के खाने का क्या इंतिज़ाम किया हुआ है? इसी तरह इस बात की बहुत ख़ुशी हुई जब हुज़ूर ने अपने घाना के मनपसंद खानों का वर्णन फ़रमाया। अल्हम्दोलिल्ला कि यह मुलाक़ात रूहानियत से भरपूर, बेदार करने वाली और बहुत बाबरकत थी।

★ सैक्रेटरी नास्रात ने लिखा कि उन्होंने महसूस किया कि वह रुहानी तौर पर बेदार हो गई हैं।★ सैक्रेटरी साहिबा तहरीके जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद ने अपने तास्सुरात का प्रकटन करते हुए कहा कि ऐसा महसूस हो रहा था मानों प्यारे हुज़ूर से आमने सामने मुलाक़ात हो रही हो। यह उनकी ज़िंदगी में हज़रत अमीरुल मौमेनीन से मुलाक़ात का पहला अवसर था। ★ सैक्रेटरी तब्लीग़ ने बताया कि हुज़ूर का यह कहना कि उन्हें लजना घाना से बहुत आशाएं हैं। यह बात उन्हें तब्लीग़ के मैदान में मज़ीद मेहनत करने की तरग़ीब देती है।

तक़रीबन समस्त आमिला की मेम्बरात ने लिखा कि सबसे प्रभावी हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की यह नसीहत थी कि समस्त मेम्बरात प्रतिदिन पांचों समय नमाज़ अदा करने वाली हों, आदर्श मुस्लिम महिला हों, बच्चों की अच्छी परवरिश करने वाली हों ताकि वे नेक बनें।

अल्हम्दोलिल्ला हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला से लजना इमाइल्लाह घाना की यह मुलाक़ात इंतिहाई बाबरकत रही, रुहानी बेदारी का कारण बनी।

(रिपोर्ट : फ़हीम अहमद ख़ादिम, प्रतिनिधि अलफ़ज़ल इंटरनैशनल घाना)

(धन्यवादसहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 2 फरवरी 2021

जो जो काम किसी के सपुर्द किया है इस को दिल लगा कर करना चाहिए, वाकिफ-ए-ज़िंदगी चौबीस घंटे का वाकिफ-ए-ज़िंदगी है और चौबीस घंटे उस को काम के लिए तैयार रहना चाहिए और दूसरों से बढ़कर काम करना चाहिए और अपना नमूना क़ायम करना चाहिए, यह नसीहत है, इस पर आप सब अमल करें

नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया बेल्जियम की हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर के उपदेश

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया बेल्जियम की वर्चूअल मुलाक़ात तिथि 26 सितंबर 2021 ई. रविवार के दिन हुई। यह मुलाक़ात (uccle) की मस्जिद बैतूल मुजीब के मर्दाना हाल में हुई।

जनरल सैक्रेटरी को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निमन्लिखित हिदायात दीं। सौ फ़ीसद रिपोर्टें आनी चाहिऐं। जमाअतों को सम्भालें। रिपोटों पर चर्चा होना चाहिए ताकि उन्हें पता चले कि उनके काम का जायज़ा लिया गया है और आगे कहाँ बेहतरी करनी है। जब उनको फ़ीडबैक ही नहीं जाता तो वह तो यही समझेंगे कि बस इतना ही काम काफ़ी है कि रिपोर्ट बना कर भेज दी, चाहे कुछ काम हुआ या नहीं हुआ।

सेक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन वक्फे आरज़ी से हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि आपकी आमला के कितने अफ़राद ने वक्फे आरज़ीकी है। इस पर सैक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन वक्फे आरज़ी ने अर्ज़ किया कि किसी ने नहीं की। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया "चिराग़ तले अंधेरा।'' यदि आप लोगों ने वक़्फ़-ए-आरज़ी नहीं की तो फिर और कौन करेगा? फिर हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि आपकी आमला के मैंबरान में से कितने अफ़राद बच्चों को या किसी व्यक्ति को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा रहे हैं। इस पर सैक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन वक्फे आरज़ी ने अर्ज़ किया कि कोई भी नहीं पढ़ा रहा। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कहा कि यदि आमला मैंबरान काम नहीं कर रहे तो बाक़ीयों पर किया प्रभाव होगा। पहले तो आप अपने घर से शुरू करें। यदि आप काम नहीं करेंगे तो लोगों को काम करने की आदत ही नहीं पड़ेगी। आपका उदाहरण देखेंगे नहीं तो वह सामने कैसे आएँगे? इसलिए पहले तो समस्त आमला के मैंबरान से समय लें, वक़्फ़-ए-आरज़ी का फ़ार्म भरवाएं कि ये साल में दो हफ़्ते की वक़्फ़-ए-आरज़ी करेंगे। फिर जहां-जहां ये रहते हैं वहां के सदरान से ये जायज़ा लें कि कितने अफ़राद हैं जो क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना नहीं जानते। उनको क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने का कोई इंतिज़ाम है या नहीं? इंतिज़ाम नहीं है तो देखें कि ये आमला के मैंबरान पढ़ा रहे हैं या नहीं पढ़ा रहे। फिर आपकी जो 14 जमाअतें हैं, उनके सदरान और लोकल आमला को कहें कि वे अपना आचरण दिखाएंगे। फिर अन्सारुल्लाह की आमला को कहें कि वे अपनी आमला को कहे, वे वक़्फ़-ए-आरज़ी के लिए आचरण दिखाएंगे और क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने का उदाहरण दिखाएंगे, फिर खुद्दामुल अहमदिया को कहें , फिर लजना को कहें। यदि आप इस तरह केवल आमला को ही क़ाबू करले, हर सतह पर, जमाअती भी और ज़ेली तन्ज़ीमों की भी तो आप 80 फ़ीसद तो आपका काम हो गया। केवल काग़ज़ भरना और लोगों के पीछे पड़ना तो मक़सद नहीं है। हदेदार यदि स्वयं अपना नमूना दिखाएगा तो लोग ख़ुद बख़ुद काम करना शुरू कर देंगे।

सैक्रेटरी इशाअत को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपके इलम में होना चाहिए कि मुल्क में उर्दू बोलने वाले, फ़लीमश बोलने वाले और फ्रैंच बोलने वाले कितने लोग हैं। फिर बंगाली भी हैं, अफ्रीकन भी हैं। अरबी बोलने वाले कितने हैं, उन के लिए क्या कर रहे हैं। फिर "अल्- तक़वा" है, अरब लोग यह पत्रिका देखते हैं? उन तक यह पत्रिका पहुंचनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया को फ़रमाया कि आप को पंद्रह से पच्चीस साल के ख़ुद्दाम की संख्यां भी मालूम होनी चाहिए ताकि उनके अनुसार उनके प्रोग्राम रखे जा सकें और पच्चीस से चालीस साल के ख़ुद्दाम की संख्यां भी मालूम होनी चाहिए और उनके अनुसार उनके प्रोग्राम रखने चाहिऐं। यह भी मालूम होना चाहिए कि कौन उर्दू बोलने वाले हैं, कौन फ़लीमश बोलने वाले हैं, कौन फ्रैंच बोलने वाले हैं। ये सब आदाद-ओ-शुमार होने चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर के दरयाफ़त फ़रमाने पर सैक्रेटरी वक़्फ़ नौ ने लाइलमी का इज़हार किया कि उन्हें 15 साल से ऊपर के वाकफ़ीन नौ की संख्यां का निर्धारित इलम नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ से फ़रमाया बार-बार मैं सर्कुलर भेज रहा हूँ कि 15 साल की उमर के बाद वक़्फ़ के bond (renew) करने चाहिऐं और जब 18 साल के यूनीवर्सिटी जाएं तब भी तजदीद होनी चाहिए। ये bond फिल करवा रहे हैं कि वक़्फ़ जारी रखना चाहते हैं कि नहीं? इस पर सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ ने अर्ज़ किया कि कुछ ने

भेजा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "कुछ ने भेजा है तो फिर फ़ायदा क्या? फ़रमाया यदि यह पता हो तब ही तो आप उन्हें सिलेबस भेज सकते हैं, फिर ही उनके इमतिहान ले सकते हैं। आप सिलेबस नहीं पढ़ाते? अब तो वक़्फ़-ए-नौ का इक्कीस साल तक की उमर का सिलेबस बन चुका हुआ है। क्या आपने समस्त वाक़फ़ीन-ए-नौ को सिलेबस पहुंचा दिया है? इस पर सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ ने अर्ज़ किया जी हुज़ूर पहुंचाएं गे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "पहुंचाएंगे" पहुंचाया नहीं है। यह तो काम करने का तरीक़ा नहीं है। मुझे रिपोर्टें तो नहीं चाहिऐं, मुझे तो यह चाहिए कि हक़ीक़त में काम क्या हुआ है। 15 वर्ष के बच्चों का पता होना चाहिए कि कितने स्कूल जा रहे हैं, पढ़ाई छोड़ तो नहीं दी, फिर पता होना चाहिए कि कौन सी यूनीवर्सिटी में जा रहे हैं, क्या-क्या पढ़ाई कर रहे हैं। उनको गाईडनस दे रहे हैं कि नहीं। केवल चार आदमी जामिआ में भेजने से मक़सद तो पूरा नहीं हो जाता कि हमारे इतने बच्चे जामिआ में चले गए। यह बताएं कि कितने बच्चे डाक्टर बने, कितने टीचर बने और कब वे वक़्फ़ के लिए पेश करने वाले हैं। अन्य विषय से ताल्लुक़ रखने वाले कितने हैं। कितने लड़के हैं, कितनी लड़कियां हैं। ये सारी मालूमात होनी चाहिऐं। फ़रमाया जो संख्यां हैं, उन पर काम करें। देखें कि वे वक़्फ़ में आने के लिए तैयार हैं कि नहीं, वक़्फ़ करेंगे या केवल टाइटल लगाया हुआ है। बाक़ायदा एक स्कीम बना के डैटा इकट्ठा करना चाहिए कि इस इस आयु की कैटेगरी के लोग हैं। यह यह पढ़ाई कर रहे हैं, ये फ़ारिग़ हो चुके हैं। अब आइन्दा ये वक़्फ़ करना चाहते हैं कि नहीं? यदि करना चाहते हैं तो क्या शिक्षा मुकम्मल करने के बाद कुछ experience लेना चाहते हैं, क्या शिक्षा मुकम्मल करने के बाद उन्होंने आगे पढ़ाई करने या ट्रेनिंग लेने के लिए मुझ से पूछा है? या मुझे लिखा है कि हमने शिक्षा मुकम्मल कर ली है, अब हमारे लिए किया हुक्म है, हम क्या करें, अपना कोई काम करें या जमाअत अहमदिया को, निज़ाम को हमारी कोई ज़रूरत है। ये समस्त इन्फ़ार्मेशन आपकी तरफ़ से आए तो हम उनको मज़ीद आगे गाईड कर सकते हैं। यदि आप सेक्रेटरियान नैशनल और लोकल सतह पर काम नहीं कर रहे तो ख़लीफ़ा को कहाँ से इन्फ़ार्मेशन मिलनी है? बहुत काम होने वाला है।

सैक्रेटरी तालीम को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि आपके पास लड़कों और लड़कियों दोनों का डैटा होना चाहिए। फिर उस के अनुसार उनको गाईड करने का किस तरह उन्होंने आगे पढ़ना है, किन फ़ील्डज़ में जमाअत को ज़रूरत है, उनके फ़ायदे के लिए क्या विषय हो सकते हैं। वक़्फ़-ए-नौ वाले वक़्फ़-ए-नौ को करें और सैक्रेटरी तालीम बाक़ी जमाअत के स्टूडैंटस को गाइडनस फ़राहम करे।

सैक्रेटरी तर्बीयत को हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जायज़ा लें कि घरों में नमाज़ बाजमाअत का इंतिज़ाम हो रहा है कि नहीं, हालात ठीक हैं तो देखें कि मस्जिद या नमाज़ सैंटर में नमाज़ बाजमाअत का इंतिज़ाम हो रहा है कि नहीं। घरों में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने का रिवाज है कि नहीं। अहमदी बच्चों लड़कों और लड़कियों की तर्बीयत करनी है कि आपस में रिश्ते करें। फिर झगड़े हैं, उनसे कैसे बचना है। इस समाज की जो बुराईयां हैं, उनसे कैसे बचना है।

सैक्रेटरी अमूरे ख़ारिजा को हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपकी आमला के जो मैंबरान बैठे हुए हैं उनको कहें कि अपने लोकल कौंसिलर और मैंबर आफ़ पार्लीमैंट से सम्पर्क रखें। आपको नैशनल लेवल पर मैंबरान-ए-पार्लीमैंट से राबते रखने चाहिऐं। डिप्लोमैट से राबते रखने चाहिऐं, इसी तरह दूसरी तन्ज़ीमों, मज़हबी तन्ज़ीमों, चर्चों से और चैरिटी आर्गेनाईज़ेशन से सम्पर्क रखने चाहिऐं ताकि जब आप कोई प्रोग्राम करें तो उन्हें बुला सकें। जो भी बैरूनी अहम अफ़राद हैं, उनसे ऐसे अच्छे राबते हों कि उन्हें मालूम हो कि जमाअत अहमदिया क्या है। इस समय जब कि इस्लामो फोबिया बहुत अत्याधिकत फैल गया है, इन हालात में उन्हें इलम होना चाहिए कि यदि उन्होंने इस्लाम की हक़ीक़ी तस्वीर देखनी है तो वे इस्लाम, अहमदियों से आकर पूछें। उनको आप पर यक़ीन होना चाहिए कि जो आप कहते हैं, सही कहते हैं।

सेक्रेटरी माल से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया यदि वसीयत वालों ने चंदा नहीं दिया, उनकी वसीयत कैंसल होनी चाहिए। जो छः माह के बकायादार मुसियान हैं, उनकी तो वसीयत क़ायम नहीं रह सकती। उन पर कार्रवाई होनी चाहिए थी। सैक्रेटरी वसाया को बताना चाहिए था।

सैक्रेटरी नौमुबाईन से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने दरयाफ़त फ़रमाया कि आपने ऐसा कोई प्रोग्राम शुरू किया हुआ है कि अरबों के अरबों के साथ प्रोग्राम हों, लोकल लोगों के लिए लोकल लोगों के साथ, एशीयन के लिए एशीयन के साथ, बंगालियों के बंगालियों के साथ? फिर फ़रमाया हर एक को सम्भालें। एक प्रेम क़ायम करें। हर एक को भाई भाई बनाएँ या बहनें बनाएँ ताकि वे उन को सम्भालें। हर एक से पर्सनल contact होना चाहिए।

सेक्रेटरी अमूरे-ए-आमा से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि शोबा अमूरे-ए-आम्मा का काम यह है कि ख़ुद जायज़ा ले कि आपकी जमाअत में कितने लोग ऐसे हैं जो बे रोज़गार हैं, उनके लिए रोज़गार मुहय्या करने का इंतिज़ाम करना है। सैक्रेटरी तर्बीयत की तरफ़ से यदि रिपोर्ट आती है कि किसी की अख़लाक़ी हालत कमज़ोर है तो ख़ुद उनका जायज़ा लेना है। ज़ेली तन्ज़ीमों से सम्पर्क रखना है कि उनको कहीं ज़रूरत तो नहीं। इसी तरह जो शिक्षा छोड़ रहे हैं, क्यों छोड़ रहे हैं, उनका जायज़ा लेना है और फिर शिक्षा के साथ जोड़ना है, केवल झगड़ों को निमटाना अमुरे-ए-आम्मा का काम नहीं है, यह तो एक काम है।

सैक्रेटरी रिश्ता नाता ने अर्ज़ किया कि रिश्तों की तलाश के सिलसिला में जर्मनी, यू.के और फ़्रांस से सम्पर्क करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इरशाद फ़रमाया कि आप तिबशीर् से सम्पर्क करें, उनके पास मर्कज़ी रिश्ता नाता डैसक है, आप उनसे कहें कि रिश्ते बताएं। जमाअत में तहरीक भी किया करें कि अहमदी लड़के अहमदी लड़कियों से रिश्ते किया करें। अल्लाह तआला फ़ज़ल करे।

अंत पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदिप लोग साथ-साथ तिबशीर् की रिपोर्टस पढ़ते रहा करें तो इस में विभागों के लिए बहुत सारी हिदायात मिल जाती हैं। विभिन्न दौराजात की रिपोर्टस हैं, आप निकाल कर देखें , उनमें मुरब्बियान के लिए भी और आमला के मैंबरान के लिए भी हिदायात हैं। जिन्हों ने अमल करना होता है, वहीं से देख लेते हैं। जिन्हों ने अमल करना होता है, वे ख़ुतबा सुनते हैं और ख़ुतबा में से कोई प्वाईंट निकाल लेते हैं। चाहे ख़ुतबा साहाब रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत पर बयान हो रहा हो, वहीं से प्वाईंट निकाल लेते हैं कि यह हमारा काम है, यह हमने करना है। तो जिसने नुकात निकालने होते हैं, वे निकाल कर काम शुरू कर देते हैं। यह अमीर का काम है, कि जो देखो, उसके बाद मुताल्लिक़ा सैक्रेटरी से कहे कि इस पर अमल करो। तो यह अब आपकी ज़िम्मेदारी है कि काम करवाएं। सेक्रेटरियान को तो मैंने कह दिया है कि यह करो, वह करो, लेकिन निगरानी करना तो आपका काम है। उनसे काम लेना और काम करवाना आपका काम है। उनके काम न करने से आप बरी उज़्ज़िम्मा नहीं हो जाते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि जो जो काम किसी के सपुर्द किया है, उस को दिल लगा कर करना चाहिए। वाकिफ-ए-ज़िंदगी, चौबीस घंटे का वाकिफ-ए-ज़िंदगी है और चौबीस घंटे उस को काम के लिए तैयार रहना चाहिए और दूसरों से बढ़कर काम करना चाहिए और अपना उदाहरण क़ायम करना चाहिए। यह नसीहत है, इस पर आप सब अमल करें। अल्लाह तआला आप सबको इस की तौफ़ीक़ दे। अल्लाह हाफ़िज़ अल्लाह तआला आप सब पर फ़ज़ल करे। अस्सलामो अलैकुम।

(अब्दुल माजिद ताहिर, ऐडीशनल वकीलुल तब्शीर लंदन)

(धन्यवादसहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 1 जनवरी 2021)

यदि पति पत्नी के आपस के सम्बन्ध अच्छे नहीं होंगे तो बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा और इस तरीक़े से हम नई अहमदी नसलों के फ्यूचर को भी बर्बाद कर देंगे, इस लिए सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि मर्द अर्थात पति घर में अपने अच्छे आचरण दिखाए

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से वाकफ़ीन नौ इंडोनेशिया की ऑनलाइन मुलाक़ात

जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया के 50 वाकफ़ीन नौ को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तिथि 23 जनवरी 2021 ई. दिन हफ़्ता एक घंटा ऑनलाइन मुलाक़ात का सौभाग्य मिला। यह मुलाक़ात जकार्ता के रहमत हाल में हुई।

प्रोग्राम का प्रारम्भ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। हाफ़िज़ विल्दन फ़ाज़िल ने सूरत अल् साफ़ात आयत 103 से114 की तिलावत की। इसके बाद अज़ीज़ मुहम्मद अनवर ने इसका अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। नज़म के बाद प्रिय मुहम्मद

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 4 November 2021 Issue No.44

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तल्हा ने "जमाअत अहमदिया इंडोनेशिया के सौ साला जश्ने तशक्कुर और वाकफ़ीन नौ का किरदार" के विषय पर मुख़्तसर तक़रीर पेश की।

इसके बाद नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ आदरणीय अहमद अब्दुर्रहमान साहिब ने मुख़्तसर रिपोर्ट पेश की। उन्होंने बताया कि इंडोनेशिया में कुल 2016 वाकफ़ीन नौ हैं जिन में से 1233वाकफ़ीन नौ और 783 वाकिफ़ात नौ हैं। इस समय 61 वाकफ़ीन नौ मैदान-ए-अमल में अपनी ख़िदमात पेश करने की सआदत पा रहे हैं जिन में से 27 मुरब्बियान हैं, छ: एम.टी.ए में, चार जमाअती स्कूल में, तीन ज़ेली तन्ज़ीमों के दफ़ातिर में, एक ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के दफ़्तर में तथा 20 विभिन्न जमाअती दफ़ातिर में ख़िदमात बजा ला रहे हैं।

इस रिपोर्ट के बाद चार मिनट की डाक्यूमेंट्री हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश की गई जिसमें इंडोनेशिया के विभिन्न सूबों के वाकफ़ीन और वाकिफ़ात नौ की तरफ़ से अपने आक़ा के लिए सलाम का तोहफ़ा पेश किया गया।

इस मुलाक़ात के दौरान असंख्य वाकफ़ीन नौ को अपने प्यारे आक़ा से प्रश्न करने और उनके उत्तर हासिल करने का अवसर मिला।

एक वाकिफ-ए-नौ अज़ीज़ तौफ़ीक़ ख़ालिद अहमद अज़बादन्विंग ने पति पत्नी के सम्बन्ध के विषय में प्रश्न पेश किया कि क्या हुज़ूर हमें ऐसी बाबरकत हिदायत दे सकते हैं कि किस तरह हम अपने निकाह को निभा सकें, विनीत नए शादीशुदा जोड़े के लिए।

हुज़ूर अनवर ने इस प्रश्न के उत्तर फ़रमाया : अच्छा माशाअल्लाह, आपके जिस्म से पता चलता है कि आपकी पत्नी बहुत अच्छा खाना पकाती हैं। लिहाज़ा जब भी आपकी पत्नी आपको अच्छा खाना देती हैं तो फिर आपको ज़रूर उनकी प्रशंसा करनी चाहीए।

हमेशा यही सोचना चाहिए कि मुझे अपनी पत्नी के सामने उदाहरण बनना है। और हमेशा यही सोचना चाहिए कि यदि पति पत्नी के आपस के सम्बन्ध अच्छे नहीं होंगे तो हमारे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। और इस तरीक़े से हम नई अहमदी नसलों के फ्यूचर को भी बर्बाद कर देंगे।

इसलिए सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि मर्द अर्थात पति घर में अपने अच्छे आचरण दिखाए। और हमेशा अपनी पत्नी और बच्चों से नरमी और ख़ुशखुलक़ी से पेश आना है। फिर यदि आप इस तरह का व्यवहार करें, तो फिर आपके घर में कोई मसला नहीं होगा।

एक और वाकिफ-ए-नौ ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि कुछ डाक्यूमेंट्रीज़ को देखकर मुझे मालूम हुआ है कि ख़िलाफ़त से पूर्व हुज़ूर की तबीयत ऐसी थी कि आपको सैंटर आफ़ अटेंशन बनना पसंद नहीं था। मेरा प्रश्न यह है कि ख़लीफ़ा बनने के बाद हुज़ूर अनवर किस तरह इस नए माहौल में एडजस्ट हुए हैं?

हुज़ूर अनवर ने इस के उत्तर में फ़रमाया :

i don't know myself. It is allah who has changed me. right. that is enough.

मैं ख़ुद नहीं जानता। यह अल्लाह है जिसने मुझे बदल दिया। ठीक। यह काफ़ी है।

अहमद अब्दुर्रहमान साहिब वाकिफ-ए-नौ बोगोर (नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ) लिखते हैं : अलहमदो लिल्लाह यह हमारे लिए ख़ुदा तआला का बहुत बड़ा फ़ज़ल और एहसान है कि प्रोग्राम की समस्त कार्रवाई बख़ैर-ओ-ख़ूबी पूर्ण हुई। इस मुलाक़ात का इंतिज़ार और इस की तैयारी दो माह पूर्व ही शुरू हो गई थी। हमारी यह पूरी कोशिश थी कि इस क्लास की भरपूर तैयारी करके प्यारे आक़ा के सामने इस प्रोग्राम की कार्रवाई बेहतरीन रंग में पेश करें। अल्लाह करे कि प्यारे आक़ा को हमारी यह अदना कोशिश पसंद आई हो। आमीन

(रिपोर्ट: फ़ज़ल उमर फ़ारूक़, नुमाइंदा इंडोनेशिया)

(धन्यवाद सहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 5 फ़रवरी 2021)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

,जितनी बीमारियां उसको लगी होती हैं। फिर जब वह इतनी कमज़ोरियों का निशाना और सार है तो उसके लिए अमन और सुरक्षा का यही मार्ग है कि ख़ुदा तआला के साथ उसका मामला साफ़ हो और वह उसका सच्चा और मुख़्लिस बंदा बने और इसके लिए ज़रूरी है कि वह सच्चाई को धारण करे। जिस्मानी निज़ाम का सार भी सच्चाई ही है। जो व्यक्ति सच्चाई को छोड़ते हैं और ख़यानत करके जर्मों को पनाह में लाने वाली झूठ वाली सुरक्षा ख़्याल करते हैं। वह सख़्त ग़लती पर हैं।

झूठ धारण करने से इन्सान का दिल अन्धेरा हो जाता है

क्षणिक और अस्थायी तौर पर कोई लाभ इन्सान समझ ले परन्तु वास्तव में झूठ धारण करने से इन्सान का दिल अन्धेरा हो जाता है और अंदर ही अंदर उसे एक दीमक लग जाती है। एक झूट के लिए फिर उसे बहुत से झूट तराशने पड़ते हैं,क्योंकि इस झूट को सच्चाई का रंग देना होता है। अत: इसी तरह अंदर ही अंदर उसके अख़लाक़ी और रूहानी क़ुव्वतें नष्ट हो जाती हैं और फिर उसे यहां तक साहस और दिलेरी हो जाती है कि ख़ुदा तआला पर भी झूठ बोल लेता और ख़ुदा के मुर्सलों और मामूरों को झुठला भी देता है और ख़ुदा तआला के निकट वह अज़लम (सब से बड़ा अत्याचारी) ठहरता है। जैसा के ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا اَوْ کَذَّبَ بِاٰیٰتِہٖ (अल-अनआम:21) अर्थात उस व्यक्ति से बढ़कर कौन ज़ालिम हो सकता है जो अल्लाह तआला पर झूट और इफ़्तिरा बाँधे या उसके निशानों को झुठलाए। अवश्य याद रखो कि झूठ बहुत ही बुरी बला है। इन्सान को हलाक कर देता है। इससे बढ़कर झूठ का ख़तरनाक नतीजा क्या होगा कि इन्सान ख़ुदा तआला के मुर्सलों और इस के निशानों को झुठला करके सज़ा का अधिकारी हो जाता है। अत: सच्चाई धारण करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

वह एक ऐसे उच्च स्थान को पाले जो इस निज़ाम की अज़मत के अनुसार हो।

यदि ग़ौर किया जाए तो सारा निज़ाम तो अलग रहा, अल्लाह तआला ने छोटी से छोटी चीज़ में ही ऐसे इसरार रखे हैं कि ख़त्म होने में नहीं आते। इन्सानी शरीर को ही ले लो, उसका निज़ाम कैसा पेचीदा है । हज़ारों लाखों चिकित्सक और शारीरिक रचना के माहिर इसकी हक़ीक़त के मालूम करने में लगे हुए हैं लेकिन अब तक इन विषयों का अहाता नहीं कर सके जो इन्सानी शरीर से ताल्लुक़ रखते हैं। क़ुरआन-ए-करीम के नुज़ूल के ज़माना के बाद तो यूरोप ने विज्ञान में बे-इंतिहा कमाल हासिल किया है परन्तु अब तक इन्सानी शरीर के सम्बन्ध में पूरा अहाता नहीं कर सका। फिर इस क़दर वसीअ क़वानीन पर जिस वजूद की बुनियाद रखी गई है उसकी पैदाइश के उद्देश्य को इस क़दर हक़ीर बताना जैसा कि क़ियामत के इंकार करने वाले बताते हैं किस तरह उचित समझा जा सकता है।

इसी तप्रकार यह निज़ाम नबियों की सफ़लता और उनके दुश्मनों की तबाही पर भी दलालत करता है। ज़मीन को आसमान से जुदा कर दो फिर उसकी क्या हालत हो जाती है, एक दिन भी नहीं ठहर सकती। अत: जो लोग यह ख़्याल करते हैं कि रुहानी आसमान से सम्बन्ध विच्छेद कर के बचे रहेंगे कैसे अंधे हैं। जिस तरह इस कामिल निज़ाम का भाग रहते हुए ही ज़मीन महफ़ूज़ रह सकती है इसी तरह रुहानी निज़ाम का भाग बनने से ही इन्सान हलाकत से बच सकता है अन्यथा उसके बचने की कोई सूरत नहीं विशेषता जबकि वह इस निज़ाम पर हमला-आवर हो तो उसकी निजात पूर्णता असम्भव है। अत: नबी करीम अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम के इंकार करने वालों को बताया गया है कि रुहानी आसमान से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने की वजह से उनके उपकरण किसी काम भी न आएँगे बल्कि अब उनकी तबाही और मुस्लमानों की तरक़्क़ी का वक़्त आ पहुंचा है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 107 प्रकाशन क़ादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad